श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला २-१०

मन्दिर-वेदीप्रतिष्ठा-कलशारोहणविधि

सम्पादक

प० पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर

प्रकाशक

श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला

भदैनी, वाराणसी

ग्रन्थमाला सम्पादक और नियामक
पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

प्रथमावृत्ति १००० प्रति
दीपमालिका—
वीरनिर्वाण सम्वत् २४८६
मूल्य १) २५ नया पैसा

मुद्रक—
कैलाश प्रेस,
सोनारपुरा, वाराणसी

आद्य वक्तव्य

पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठा, मन्दिरप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा, कलशारोहण तथा अन्य विधान आदिके कार्य समाजमें सदासे होते चले आये हैं। इन सबका अपना अपना महत्त्व है यह यहाँ बतानेकी आवश्यकता नहीं। एक समय था कि जब जैन समाजमें स्वर्गीय पं० पन्नालालजी न्यायदिवाकर, उदासीन श्रावक प० पन्नालाल जी गोधा, प० मोतीलालजी वर्णी, प० नरसिंहदास जी, पं० मूलचन्द्रजी तिलोआ, पं० हजारीमलजी अजमेरा और पं० मुन्दरलालजी बसवा निवासी आदि विद्वान् प्रतिष्ठा विधिके माने हुए विद्वान् थे और समाजमें सर्वत्र इन्हीं विद्वानोंके द्वारा प्रतिष्ठाका कार्य सम्पन्न होता था। इन विद्वानोंने प्रतिष्ठाविषयक शास्त्रोंका संकलन अपनी पोथियोंमें सगृहीत करके रक्खा था और उसीके आधार पर वे सब जगह विधिविधान कराते थे। दुर्भाग्यवश वे विद्वान् अब हमारे बीचमें नहीं रहे। उनका सगृहीत साहित्य भी यत्र तत्र पड़ा रह गया।

इधर जैन समाजमें उच्च कोटिके विद्वान तैयार तो हुए परन्तु उनकी दृष्टि प्रतिष्ठाकार्यकी ओर नहीं गई।, उसका कारण है—प्रतिष्ठापाठोंमें प्रतिष्ठाचार्यका जो लक्षण बतया है उसे देखते हुए अपने आपमें कमीका अनुभव कर उच्च विद्वान् उस ओर नहीं बढ़े। अवसर देख कुछ विद्वान् आगे आये भी तो उनके पास इस विषयका साहित्य नहीं रहा। प्रतिष्ठापाठ अवश्य हैं पर उनका पूर्वापर अध्ययन कर जब तक भिन्न भिन्न कार्यों के योग्य विधिका संकलन नहीं कर लिया जाता है तब तक विधि करानेमें

सदा कठिनाईका अनुभव करना पड़ता है। कितने ही विद्वानोंमें सामग्री छाटनेकी योग्यता नहीं है और कितने ही योग्यता रखते हुए भी आलस्यवश यह कार्य नहीं करते। फल यह हुआ कि कितने ही लोग जैन विवाह विधियोंमें छपे मङ्गलाष्टक और हवनकी विधि को लेकर ही प्रतिष्ठाचार्य बन बैठे हैं। समाजमें इस विषयका ज्ञान नहीं साथ ही उसमें वणिक् वृत्तिके कारण यह भावना आ गई कि छोटा मोटा कोई भी विद्वान बुलालो और उससे कम खर्चमें यह कार्य करालो। इसलिये शास्त्रोक्त प्रतिष्ठा करानेवाले विरले ही दिखाई देते हैं। यही कारण है कि प्रतिष्ठाके यथार्थ लाभसे हम लोग वञ्चित हो रहे हैं।

उपलब्ध प्रतिष्ठापाठोंमें श्रीमद् जयसेनाचार्य रचित प्रतिष्ठापाठ सबसे प्राचीन है। जयसेनाचार्य कुन्द कुन्द स्वामीके अग्रधर शिष्य थे और उन्हींकी प्रेरणासे उन्होंने रत्नगिरिके ऊपर लालाट्ट राजाके द्वारा निमापित चन्द्रप्रभ चैत्यालयकी प्रतिष्ठाके लिये इसकी रचना की थी। इसकी रचना बहुत ही सुन्दर तथा विधि विधान आडम्बरहीन है। अत इसे ही सामने रखकर मैंने मन्दिरप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा और कलशारोहणकी विधियोंका संकलन किया है। हमारे प्रान्तके स्वर्गीय प्रतिष्ठाचार्य श्री पं० मोतीलालजी वर्णी, पं० मूलचन्द्रजी बिलौआ और प० बालचन्द्रजी राजवैद्यके सम्पर्कमें रहकर तथा इनकी हस्तलिखित पोथियोंका अवलोकन कर मैंने अपनी सुविधाके लिये जो सामग्री संकलित की थी उसे इस प्रतिष्ठापाठसे मिलान कर परिष्कृत किया है। कुछ सामग्री उक्त विद्वानोंकी पोथियोंसे भी संगृहीत है। इस पुस्तकमें मेरे स्वयंके निर्मित १५ श्लोक ही हैं, शेष सब संगृहीत हैं और जहाँ से जो सामग्री संगृहीत की है उसका उल्लेख पादटिप्पणमें कर दिया है। जहाँ टिप्पण नहीं है वह भी जयसेनाचार्यके प्रतिष्ठापाठसे संगृहीत है ऐसा समझना चाहिए।

मैंने यह संग्रह बहुत पहले कर रक्खा था परन्तु इसे प्रकाशित करानेकी ओर दृष्टि नहीं गई। अभी एक दो जगह प्रतिष्ठाचार्यो को जब मैंने केवल विवाहविधि लेकर प्रतिष्ठा कराते हुए देखा तब मुझे बहुत दुःख हुआ और मैंने निश्चय किया कि छोटा मोटा जो कुछ भी संग्रह है उसे प्रकाशित करा दिया जाय जिससे विद्वानोंकी कठिनाई दूर हो सके। यह विधि पूर्ण है यह मेरा दावा नहीं। मेरा तो यह अल्प प्रयास है जिसे मैं विद्वानों की सुविधाके लिये बड़ी नम्रतासे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री जयसेनाचार्यने प्रतिष्ठाचार्यका लक्षण लिखते हुए लिखा है—

स्याद्वादधुर्योऽक्षरदोषवेत्ता निरालसो रोगविहीनदेहः।
प्रायः प्रकर्त्ता दमदानशीलो जितेन्द्रियो देवगुरुप्रमाणः ॥१॥
शास्त्रार्थसंपत्तिविदीर्णवादो धर्मोपदेशप्रणयः क्षमावान्।
रागादिमान्यो नययोगभावी तपोव्रतानुष्ठितपूतदेहः ॥३॥
पूर्वं निमित्ताद्यनुमापकोऽर्थ्यमदेहहारी यजनैकचित्तः।
सद्ब्राह्मणो ब्रह्मविदां पटिष्ठो जिनैकधर्मा गुरुदत्तमन्त्रः ॥४॥
भुक्त्वा हविष्यान्नमरात्रिभोजी निद्रां विजेतुं विहितोद्यमश्च।
गतस्पृहो भक्तिपरात्मदुःखप्रहाणये सिद्धमनुर्विधिज्ञः ॥५॥
कुलक्रमायातसुविद्यया यः प्राप्तोपसर्गं परिहर्तुमीशः।
सोऽत्र प्रतिष्ठाविधिषु प्रयोक्ता श्लाघ्योऽन्यथा दोषवती प्रतिष्ठा॥६
शास्त्रानभिज्ञं कुलजातिदूरं लोभनलम्पुष्टमशान्तशीलम्।
परम्पराशून्यमपार्थसार्थं दूरात् त्यजन्तु प्रणिधानमिष्ठाः ॥७॥

जो स्याद्वाद विद्यामें प्रवीण हो, अक्षरोंके उच्चारणादि सम्बन्धी दोषोंको जाननेवाला हो, आलस्य रहित हो, नीरोग शरीर हो,

क्रियाकुशल हो, इन्द्रिय दमन और दान करना जिसका स्वभाव हो, देव और गुरुको प्रमाण माननेवाला हो, शास्त्रार्थरूप सम्पत्ति के द्वारा मिथ्यावादोंका खण्डन करनेवाला हो, धर्मोपदेशका स्नेही हो, क्षमावान् हो, राजादिसे मान्य हो, नयके योगको समझनेवाला हो, तप और व्रतसे जिसका शरीर पवित्र हो, निमित्तज्ञानी हो, पदार्थके संदेहको दूर करनेवाला हो, पूजामें ही जिसका चित्त लगा हो, उत्तम ब्राह्मण हो, ब्रह्म आत्माके जाननेवालोंमें अत्यन्त पटु हो, जिनधर्मका माननेवाला हो, गुरुने जिसे मन्त्र प्रदान किया हो, जो पवित्र भोजन करता हो, रात्रि भोजनका त्यागी हो, निद्राके जीतनेमें समर्थ हो, तृष्णा रहित हो, भक्तिमें तत्पर आत्मीय जनोंका दुःख दूर करनेके लिये जिसे नाना प्रकारके मन्त्र सिद्ध हैं, विधिका जाननेवाला हो और जो कुल क्रमागत विद्याके द्वारा प्राप्त उपसर्ग का निराकरण करनेमें समर्थ हो वही प्रशसनीय प्रतिष्ठाचार्य है। अन्यथा प्रतिष्ठा दोषपूर्ण होगी।

इस प्रकार प्रतिष्ठाचार्यका लक्षण बनाकर जयसेनाचार्यने यज मानोंको भी प्रेरित किया है कि वे ऐसे प्रतिष्ठाचार्यको दूरसे ही छोड़ देवें जो शास्त्रसे अपरिचित हो, अपने कुलका प्रलाप करनेवाला हो, लोभरूपी अग्निसे जल रहा हो, अशान्त चित्त हो, गुरु परम्परासे शून्य हो, और अर्थको नहीं जाननेवाला हो।

वसुनन्दि प्रतिष्ठासार संग्रहमें तो और भी अधिक विस्तारसे लिखा है। उक्त लक्षणको देखते हुए हमारा प्रतिष्ठाचार्योंसे नम्र अनुरोध है कि इस कार्यमें किसी प्रकारका छल नहीं होना चाहिये। गृहस्थ भोले हैं व आपको महान् समझकर प्रतिष्ठाका कार्य सौंपते हैं और आप अपनी अयोग्यता अथवा आलस्यसे पूर्ण विधि नहीं कराते हैं तो यह महान् पाप बन्धका कारण है। यदि आपसे पाठ अथवा मन्त्रोंका उच्चारण ठीक ठीक नहीं बनता है अथवा आपके

आचार विचारमें पवित्रता नहीं है तो यह काम किसी कुशल विद्वान को सौंप दीजिये और उनके सम्पर्कमें रहकर स्वयं अभ्यास कर लीजिये। गृहस्थ, विद्वान्का सम्मान करें यह उनका कर्तव्य है परन्तु विद्वान्को इस कार्यसे अर्थकी आकांक्षा नहीं रखना चाहिए। अर्थ कमानेके साधन संसारमें अनेक हैं। उनसे आप अपनी इच्छाएँ पूर्ण करें। प्रतिष्ठाके कार्यको व्यवसायका साधन न बनावें।

गृहस्थोंसे भी अनुरोध है कि वे प्रतिष्ठाके कार्यमें सामग्री आदि का संकलन करते हुए किसी प्रकारकी कृपणता न करें। यद्वा तद्वा विधि करा लेनेसे जिनमार्गकी प्रभावना न होकर अप्रभावना ही होती है। जयसेनाचार्यने लिखा है—

सामग्रीयोजने शाठ्यं कार्पण्यं योगवञ्चनम्।
न कदाचिन्मनस्वीति कुर्यात्स्वहितकामुकः॥

आत्महितैषी मनस्वी मानवको चाहिये कि वह सामग्रीके इकट्ठे करनेमें मूर्खता, कंजूसी और मन वचन कायकी कुटिलता न करे। जहाँ जैसी सामग्री चाहिये वहाँ वैसी सामग्री इकट्ठी करे और प्रतिष्ठाचार्यके कहे अनुसार प्रवृत्ति करे।

अधिकांश देखा जाता है कि पूजा विधान अथवा जुलूस आदि के कार्य देरसे प्रारम्भ किये जाते हैं अतः पीछे समयकी कमी देख बहुत सी विधि छोड़ देनी पड़ती है अथवा जल्दी जल्दी करनी पड़ती है इसलिये सब कार्य समयसे प्रारम्भ करना चाहिये जिससे निराकुलतासे सब कार्य सम्पन्न हो सकें।

वेदीप्रतिष्ठा आदिके कार्यों का आयोजन कमसे कम तीन दिन का रखना चाहिये, क्योंकि कम दिनोंमें विधि पूर्ण नहीं हो सकती। इस सामग्री के संकलन के लिये श्रीमान् रायवैद्य पं० प्यारेलालजी टीकमगढ़ने अपनी सकलित प्रतियाँ भेजकर महान उपकार किया

है इसलिये मैं उनका आभारी हूँ। कलशारोहणकी दूसरी विधि तथा नीव भरनेकी विधि खासकर उनके संकलनोंके आधारसे लिखी गई हैं।

आशा है इस संकलनसे पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठाको छोड़कर अन्य सामान्य विधि विधानके कार्योंमें विद्वानोंको कुछ सहयोग प्राप्त होगा। मैं प्रतिष्ठा विषयसे पूर्ण अनभिज्ञ नहीं हूँ फिर भी अभिज्ञ विद्वानोंका ध्यान इस कमीकी पूर्तिकी ओर आकृष्ट हो इस भावनासे मैंने यह प्रयास किया है। त्रुटियोंके लिये विद्वानोंसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

दूरवर्ती होनेसे प्रूफकी अशुद्धियाँ अधिक रह गई हैं जिन्हें पाठक शुद्धिपत्रक देखकर शुद्ध कर लें।

सागर

विनीत
पन्नालाल जैन

कृतज्ञता प्रकाश

इस पुस्तिकामें मन्दिर वेदी प्रतिष्ठा तथा कलशारोहण आदि की विधि संगृहीत की गई है। जिन विद्वानोंके सहयोग अथवा उनकी पुस्तिकाओंके संग्रहसे इस कार्यमें सहायता ली गई है उन सबका उल्लेख पादटिप्पणमें तत्तत् स्थानों पर किया गया है। पुस्तिका तैयार होने पर बीनामें सम्पन्न विद्वद्गोष्ठीके समय उपस्थित विद्वानों को दिखलाई गई थी। खास कर श्रीमान् पं० जगन्मोहनलालजी शास्त्री कटनी और सहितासूरि श्रीमान् पं० नाथूलालजी इ दौरने इसे आदि से अन्त तक देखकर उचित सुझाव दिये। उनके सुझावके अनुसार इसमें से कितने ही अंश अलग कर दिये गये और कितने ही अंश नये समाविष्ट किये गये। श्री पं० नाथूलालजी इसे अपने साथ ले गये और सुविधानुसार उन्होंने स्वयं मन्त्र आदि शुद्ध किये। प्रतिष्ठाचार्य पं० बारेलालजी टीकमगढ़ने भी आद्यन्त अवलोकन कर अनेक मन्त्रों तथा यन्त्रोंके चित्र बनाकर इसे विभूषित किया है। इसके लिये मैं प्रतिष्ठाशास्त्र के मर्मज्ञ इन विद्वानोंका अत्यन्त आभारी हूँ।

विद्वद्गोष्ठीके समय बीनामें वर्णी ग्रन्थमाला वाराणसीकी भी बैठक सम्पन्न हुई थी। उसमें श्रीमान् पं० फूलचन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानोंने ग्रन्थमालाकी ओरसे इसे प्रकाशित करनेकी स्वीकृति दी जिससे समस्त प्रेसकापी ग्रन्थमालाके कार्यालयमें भेज दी गई। अब सुविधानुसार ग्रन्थमालाकी ओरसे ही इसका प्रकाशन हो रहा है। श्री पं० फूलचन्द्रजीको छपाई की व्यवस्था करने आदि में पर्याप्त श्रम करना पड़ा है जिसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशके अतिरिक्त क्या कर सकता हूँ?

आशा करता हूँ कि इस छोटेसे संकलनसे हमारे नये विद्वानोंको प्रतिष्ठाके कार्यमें कुछ सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

सागर
२०-११-६१

विनीत
पन्नालाल जैन

अशुद्धि शोधन-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
आत्म वक्तव्य			
१	७	विनाबा	विनोबा
६	५	निमित्ति ज्ञानी	निमित्तज्ञानी
६	७	मम आत्मा	मद आत्मा
६	१५	बनाकर	बताकर
८	६	अनमिष्ट	अनिष्ट
पुस्तक			
५	१०	शैल मनुभो	शैले पे मनुभो
६	६	परिच्छिनात्	परिच्छिन्नात्
१०	१	परिविच्छियाम	परिवेषयाम
१०	८	परमेष्टिनेऽस्य	परमेष्ठिनेऽस्य
११	७	अनुभ	छनुभ
१४	६	साधुम्योऽर्च्यते	साधु मोऽभ्यर्च्यते
१७	११	मुग्धोद्गमभ	मुग्धोद्गमसम
२०	१२	ओम्	ओम्
२४	१५	चतुर्निकाय	त्रिदृणिकाय
२५	१८	बीरान्ताम्	बीरान्ताम
२६	१	बनाने	बनावे
२६	१४	मामोदा	ममोदा
४४	१४	मन्दारसाग्निभूराग्	महारसाग्निभूपिते
६४	२०	खचिदन	खचिडत
७६	२१	उदत	उद्धत

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

मन्दिर-वेदीप्रतिष्ठा-कलशारोहणविधि

मङ्गलपञ्चक

हिन्दी गीतिका छन्द

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभावनिशाकरा
सद्बोधभानुविभाविभासितदिक्चया विदुषांवराः ।
निःसीमसौख्यसमूहमण्डितयोगखण्डितरतिवराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्रीवीरनाथजिनेश्वराः ॥१॥
सद्ध्यानतीक्ष्णकृपाणधारानिहतकर्मकदम्बका
देवेन्द्रवृन्दनरेन्द्रवन्द्याः प्राप्तसुखनिकुरम्बकाः ।
योगीन्द्रयोगनिरूपणीयाः प्राप्तबोधकलापकाः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते सिद्धा सदा सुखदायकाः ॥२॥
आचारपञ्चकचरणचारणचुञ्चवः समताधरा
नानातपोभरहेतिहापितकर्मकाः सुखिताकरा ।
गुप्तित्रयीपरिशीलनादिविभूषिता वदतां वराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्रीसूरयोऽजितशमराः ॥३॥
द्रव्यार्थभेदविभिन्नश्रुतभरपूर्णतत्त्वनिभालिनो
दुर्योगयोगनिरोधदक्षाः सकलवरगुणजालिन ।
कर्तव्यदेशनतत्परा विज्ञानगौरवशालिनः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते गुरुदेवदीधितिमालिनः ॥४॥

संयमसमित्यावश्यकापरिहाणिगुप्तिविभूषिता
पञ्चाक्षदान्तिसमुद्यता, समतासुधापरिभूषिता ।
भूपृष्ठविष्टरशायिनो विविधर्द्धिवृन्दविभूषिता
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते मुनयः सदा शमभूषिता १ ॥५॥

मन्दिरप्रतिष्ठा, वेदीप्रतिष्ठा और कलशारोहणविधिका उत्सव कमसे कम तीन दिनका रखना चाहिये। इस कार्यके लिये मन्दिरसे बाहर स्वच्छ स्थानमें सुन्दर मण्डप बनवाना चाहिये। मण्डपमें चबूतरा अथवा लकड़ीके तख्त पर विमानकी स्थापना कर उसमें श्री जिनेन्द्रदेवकी प्रतिमा विराजमान करें। श्री जी के सामने एक दूसरा तख्त लगाकर उस पर पञ्चरङ्गके चूर्णसे पञ्चपरमेष्ठीका मण्डल बनावें। मण्डलमें सबसे प्रथम बीचमें गोलाकार खींचकर उसमें ॐ लिखें। उसके बाद पाँच वलय बनावें। पहले वलयके ४६ खण्ड बनाकर उनमें अरहन्तके ४६ गुणोंकी स्थापना करें। दूसरे वलयमें ८ खण्ड बना कर सिद्धके आठ गुणों की स्थापना करें। तीसरे वलयमें ३६ खण्ड बनाकर आचार्यके ३६ गुणोंकी स्थापना करें। चौथे वलयमें २५ खण्ड बनाकर उपाध्यायके २५ गुणोंकी स्थापना करें और पाँचवें वलयमें २८ खण्ड बनाकर साधुके २८ गुणोंकी स्थापना करें। मण्डलके चारों कोनोंमें स्वस्तिक बनाकर उनपर नारियल, फूल तथा मालाओंसे सुशोभित चार मङ्गल कलश रक्खें। मङ्गल कलशों के समीप घृतके दीपक प्रज्वलित करें। मण्डलके पास अलग टेबल पर एक चौकी रखकर और उसपर सिंहासन रखकर श्री जिनेन्द्रदेवकी धातुकी प्रतिमा विराजमान करें। प्रतिमाके चारों ओर आठ

---

१ यह मंगलपञ्चक संकलयिता द्वारा निर्मित है।

प्रातिहार्य तथा अष्टमङ्गल द्रव्य रखकर शोभा बढ़ावे। प्रतिमाके ऊपर छत्रत्रय लगाये जावें और मण्डलको चमरोंसे सुशोभित किया जाय। मण्डलके बगलमें आगे पूजाके लिए एक मण्ड अलग लगाना चाहिये। जहाँ पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर पूजक पूजाके लिए खड़े हों। इस प्रकार मंडलकी तैयारी कर मन्दिरके भीतर एकान्त स्वच्छ और हवादार स्थानमें जप प्रारम्भ करना चाहिये।

कार्यकी निर्विघ्न समाप्तिके लिये सवा लक्ष, इक्कत्तर हजार, छत्तीस हजार अथवा इक्कीस हजार जप अवश्य करना चाहिये। जप करनेवाले व्यक्ति मिथ्यात्व, अन्याय और अभक्ष्यके त्यागी हों, अनुष्ठानके दिनोंमें अवश्य ही ब्रह्मचर्यका पालन करते हों, रात्रि में चारों प्रकारके आहारके त्यागी हों और शुद्ध भोजन करते हों। मन्त्रका उच्चारण शुद्ध कर सकते हों और अपने कार्यमें रुचि, श्रद्धा और उत्साह रखते हों। आठ व्यक्ति इस कार्यको निराकुलता से पूरा कर सकते हैं इसलिये इन्हें पहलेसे निश्चित कर प्रतिष्ठाचार्य सब विधि समझा देवे। जप करनेवाले महाशय शुद्ध और नये धोती दुपट्टे पहनें। एक वस्त्र धारण कर जपमें न बैठें।

जिस स्थान पर जप करना हो वहाँ बीचमें एक बड़ा बाजौटा रख कर उसपर पुष्पोंसे एक अक्षतका स्वस्तिक बनावे। फिर पाँच कलशा को नारियल, सूत, माला आदिसे सजाकर तैयार रखवे। ये कलश भले ही मिट्टीके क्यों न हों पर काममें लाये हुए न हों। एक कलशमें हल्दी, सुपारी तथा अक्षतोंके साथ १।) सवा रुपया डाल दे। शेष कलशोंमें हल्दी, सुपारी और अक्षत डाल दे। प्रधान कलश, जिसमें रुपया डाला गया है बाजौटेके बीचमें रक्खा जाय और शेष चार कलश उसके चारों दिशाओंमें रक्खे जावें। उसी बाजौटे (चौकी) पर पूर्व या उत्तर की ओर एक सिंहासन पर जिनायक यन्त्र विराजमान किया जावे। यदि यन्त्रको पूर्वमें विराजमान किया है तो उत्तरमें और उत्तरमें

विराजमान किया है तो पूर्वमें घृतका एक दीपक प्रज्वलित कर रखा जावे। इस दीपककी अखण्ड ज्योति जलती रहे ऐसी व्यवस्था करना चाहिये। मिट्टी अथवा लकड़ीके चार थंभ बनाकर उसमें पाँच रङ्गकी छोटी छोटी ध्वजाएँ लगावे और वे थंभ बाजोटाके चारों कोनोंमें रख दे। जप करनेवालोंका मुख दक्षिण दिशाकी ओर न हो। जप करनेवालोंके सामने एक धूपघट, एक धूपदान, एक स्फटिक अथवा सूतकी माला और गणनाके लिए कुछ बादामें या लौंग रखी रहें। जपका मन्त्र मुखाग्र याद न हो तो एक कागज पर लिखकर सामने रख लेना चाहिये। यन्त्रके सम्मुख पूजाके लिये अष्ट द्रव्य तथा बर्तनोंका सेट जमा कर रख लेना चाहिये। रक्षासूत्र और यज्ञोपवीत भी पहलेसे तैयार कर लेना चाहिये।

इतनी सब तैयारी करा लेनेके बाद प्रतिष्ठाचार्य जपमें बैठने वाले महाशयोंको अपने अपने आसन पर खड़ाकर सब प्रथम नीचे लिखा मङ्गलाष्टक पढ़े। सबके हाथमें पुष्प दे दे और—

'कुर्वन्तु ते मङ्गलम्'

के उच्चारणके साथ वे पुष्प बाजोटा पर स्थापित कलशाके आगे थोड़े थोड़े छोड़ते जावें।

मङ्गलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमकुटप्रद्योतरत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥१॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्तवदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।

ये विष्णु प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशति–
त्रैलोक्याभयदास्त्रिषष्टिपुरुषा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥२॥
ये पञ्चौषधऋद्धय श्रुततपोवृद्धिंगता पञ्च ये
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिण' ।
पञ्चज्ञानधराश्च येऽपि विपुला ये सिद्धिबुद्धीश्वरा
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवरा. कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥
ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता
जम्बू शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षाररौप्याद्रिषु
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले मनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥४॥
कैलासो वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी
चम्पा वा वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेदशैलोऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तिशिखरो नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वाणावनय प्रसिद्धविभवा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥५॥
जायन्ते जिन चक्रवर्ति बलभृद् भोगीन्द्र कृष्णादयो
धर्मादेव दिगङ्गनाङ्गविलसच्छश्वद्यशश्चन्दना' ।
तद्धीना नरकादियोनिषु नरा दु ख सहन्ते ध्रुव
स स्वर्गात्सुखरमणीयकपद कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥६॥
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो
यो जात परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।

य कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥७॥

आकाशमूर्त्यभावादघकुलदहनादग्निरुर्वी क्षमाप्त्या
नैःसङ्ग्याद्वायुरापः प्रगुणशमतया स्वात्मनैष्ठ्यात्सुयज्वा
सोमः सौम्यत्वयोगाद्रविरिति च विदुस्तेजसः सन्निधानात्
विश्वात्मा विश्वचक्षुर्वितरतु भवतां मङ्गलं श्रीजिनेशः ॥८॥

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्करं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणां मुखात् ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

अङ्गन्यास

मङ्गलाष्टकके बाद शरीरकी रक्षा और तत्तद् दिशाओंसे आने-वाले विघ्नोंकी निवृत्तिके लिये नीचे लिखे अनुसार अङ्गन्यास करें। दोनों हाथोंके अंगुष्ठसे लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पाँचों अंगुलियोंमें क्रमसे अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठीकी स्थापना करें। जयपुर बैटनेराल महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथोंके अंगूठोंको बराबरीसे मिलाकर सामने करें तथा—

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः'

इस मन्त्रका उच्चारण कर शिर झुकावें। फिर दोनों हाथोंकी तर्जनियों (अंगूठाके पासकी अंगुलियोंको) बराबरीसे मिलाकर सामने करें और—

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर बीचकी दोनों अंगुलियोंको मिलाकर सामने करें और—

'ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों अनामिकाओंको मिलाकर सामने कर और—

'ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों छिंगुरियोंको मिलाकर सामने करें और—

'ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों हथेलियोंको बराबर सामने फैलाकर—

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। फिर दोनों कर पृष्ठोंको बराबर सामने फैलाकर—

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः'

यह मन्त्र पढ़कर शिर झुकावें। तदनन्तर—

'ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर दाहिने हाथसे शिरका स्पर्श करें। फिर—

'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर मुखका स्पर्श करें।

'ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर हृदयका स्पर्श करें।

'ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर नाभिका स्पर्श करें।

'ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर पैरोंका स्पर्श करें।

'ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

यह मन्त्र पढ़कर पूर्व दिशामें पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

यह मन्त्र पढ़कर दक्षिण दिशामें पुष्प या पीले सरसों फेंकें।

ओं ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर पश्चिम दिशामें पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकें।

'ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

यह मन्त्र पढ़कर उत्तर दिशामें पुष्प या पीले सरसों फेंकें।

ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर दशों दिशाओंमें पुष्प या पीले सरसों फेंकें।

ओं ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शिरः रक्ष रक्ष स्वाहा

यह मन्त्र पढ़कर अपने शरीरका स्पर्श करें।

'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा

यह मन्त्र पढ़कर अपने वस्त्रोंका स्पर्श करें।

ओं ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा

यह मन्त्र पढ़कर पूजाकी सामग्रीका स्पर्श करें।

'ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर अपने खड़े होनेकी जगहकी ओर देखें।

ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वं जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर चुल्लूमें जल ले सब ओर फेंकें।

'क्षा क्षीं क्ष् क्षौं क्ष सर्वदिशासु, हां ह्रीं ह् ह्रौं ह सर्वादिशासु ॐ ह्रीं अमृत अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लू ब्लूं द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठ ठ ह्रीं स्वाहा

इस मन्त्रसे चुल्लूमें जलको मन्त्र कर अपने शिर पर सींचें। फिर प्रतिष्ठाचार्य—

'ॐ नमो नमः सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा'

इस मन्त्रसे पुष्प अथवा पीले सरसोंको सात बार मंत्र कर परिचारकोंके सिर पर डाले। और—

'ॐ हूं क्ष फट् किरिटि किरिटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षा क्षा हूं फट् स्वाहा

इस मन्त्रसे पुष्प अथवा पीले सरसों मंत्र कर सब दिशाओंमें फेंके।

तदनन्तर प्रतिष्ठाचार्य—

'ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा

यह मंत्र पढ़कर जप करनेवाले महाशयोंके दाहिने मणिबन्ध (कलाई) में रक्षासूत्र बाँधे।

मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमो गणी।

मङ्गलं कुन्दकुन्दाद्यो जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥

यह पढ़कर जप करनेवाले अपने ललाट पर केशरका तिलक लगावें। और—

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

इस मन्त्रको सबसे उच्चारण कराकर यज्ञोपवीत धारण करावे।

इसके बाद जप करनेवाले महाशय अपने अपने आसनों पर बैठ जावें। और यन्त्रके सामने बैठनेवाला नीचे लिखे अनुसार नवदेवपूजन तथा विनायकयन्त्रकी पूजा करे। पूजाके पहले—

'ओं भूर्भुवः स्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिसिञ्चयाम'
यह मन्त्र पढ़कर यन्त्र का अभिषेक करे।

नवदेवपूजन

अनन्तकालसम्भवद्भवभ्रमणभीतितो
निवार्य सदयत्स्वयं शिवोसमार्यसद्मनि।
जिनेश विश्वदर्शि विश्वनाथ मुख्यनामभिः
स्तुतं जिनं महामि नीरचन्दनैः फलैरहम्॥१॥

ओं ह्रीं अनन्तभवार्णवभयनिवारकानन्तगुणस्तुताय अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकाष्ठदहनमुक् स्वशक्तितः
सम्प्रकाश्य महनीयमानुभिः।
लोकतत्त्वमचलं निजात्मनि
संस्थितं शिवमहीपतिं यजे॥२॥

ओं ह्रीं अष्टकर्मविनाशकानन्तचतुष्टयविभासकसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्व-पामीति स्वाहा।

सार्थवाहमनवद्यविद्यया शिक्षणाय मुनिमहात्मनां चरम्।
मोक्षमार्गमलघुप्रकाशकं संयजे गुरुवरं परेश्वरम्॥३॥

ओं ह्रीं अनवद्यविद्याविद्योतनायाचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशाङ्गपरिपूर्णसच्छ्रुतं यः परानुपदिशेत पाठतः।
बोधयत्स्वसिद्धिवार्थसिद्धये तानुपाध्यायजयामि पाठकान्॥

ओं ह्रीं द्वादशाङ्गपरिपूर्णश्रुतपारगनायकबुद्धिविभवोपाध्यायपरमेष्ठिने ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उग्रमघ्र्यतपसाभिसंस्कृतिं ध्यानतानिनिविवेशिवात्मकम् ।
साधकं शिवरमासुखाप्तये साधुमीड्यपदलब्धयेऽर्चये ॥५॥

ओं ह्रीं घोरतपोऽभिसंस्कृतध्यानस्वाध्यायनिरतसाधुपरमेष्ठिने ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यो मिथ्यात्वमतङ्गजेषु तरुणप्रशुम्नसिंहायते
एकान्तातपतापितेषु समरसपीयूषमेघायते ।
श्वभ्राग्ध्यप्रहिसपवत्सु सदयं हस्तावलम्बायते
स्याद्वादध्वजमागमं तमभितः संपूजयामो वयम् ॥६

ओं ह्रीं स्याद्वादमुद्राङ्कितपरमजिनागमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनेन्द्रोक्तं धर्म सुदशगुणभेदं त्रिविधया
स्थितं सम्यक्रत्नत्रयलसितक्रियापि द्विविधया ।
प्रणीतं सागारेतरचरणतो ह्यर्घ्यमनघं
दयारूपं वन्दे मखभुवि समास्थापितमिमम् ॥७॥

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनवीतरागप्रणीतशाश्वतधर्मायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान्
वन्दे व्यन्तरभावनद्युतिवरान्कल्पामरावासगान् ।
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलैः
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥८॥

ओं ह्रीं कृत्याकृत्रिमत्रिलोकसंबन्धिजिनालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यावन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सतत भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥९॥

ओं ह्रीं त्रिलोकवर्तिवीतरागबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनायकयन्त्रपूजा

परमेष्ठिन् मङ्गलादित्रय विघ्नविनाशने।
समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ मम सन्निहितो भव ॥१॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! मङ्गल-लोकोत्तम शरणभूत! अत्रावतरावतर संवौषट्।

,, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।

,, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्वच्छैर्जलैस्तीर्थभवैर्जराप
मृत्युप्ररोगापनुदे पुरस्तात्।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान् माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥२॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चन्दनैर्गन्धहृतालिवृन्द
विवैर्हिमांशुप्रसरावदातैः।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान् माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥३॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमङ्गललोकोत्तमशरणेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदक्षतैर्मौक्तिककान्तिपाट-
च्चरैः सितैर्मानसनन्दमित्रैः ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय   अक्षत

पुष्पैरनेकैः सवर्णगन्ध
प्रभासुरैर्वासितदिग्वितानैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥५॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय   पुष्पं

नैवेद्यपिण्डैर्घृतशर्कराक्त-
हविष्यभागैः सुरमाभिरामैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥६॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय   नैवेद्य

आरातिकैरत्नसुवर्णरुक्म-
पात्रार्पितैर्ज्ञानविकासहेतोः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लोकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥७॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय   दीपं ~~~

आशासु यद्धूमवितानमृद्ध
तैर्धूपवृन्दैर्दहनापसर्पैं ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान्
लाकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥८॥

ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय धूपं

फलैरसालैर्वरदाडिमाद्यै
हृद्घ्राणहार्यैरमलैरुदारै ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्
लाकोत्तमान्माङ्गलिकान्यजेऽहम् ॥९॥

ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय फलं

...न्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे
ह्यनर्घ्यमर्घं वितरामि भक्त्या ।
...भवे भक्तिरुदारभावाद्
येषां सुखायास्तु निरन्तराय ॥ १० ॥

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय अर्घं

...दिमन्तानभवान् जिनेन्द्रान्
अर्हत्पदद्वानुपदिष्टधर्मान् ।
...श्रियालिङ्गितपादपद्मान्
यजामि भक्त्या प्रकृतिप्रसक्त्यै ॥११॥

ओं ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवसरणलक्ष्मी बिभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ

कर्माष्टनाशाच्युतभावकर्मों
द्भूतान् निजात्मस्वविलासभूपान् ।
सिद्धानन्तास्त्रिकालमध्ये
गीतान् यजामीष्टविधिप्रसक्त्यै ॥ १२॥

ओं ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगण भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिने घ

ये पञ्चधाचारपरायणानामग्रेसरा दक्षिणशिक्षिकासु ।
प्रमाणनिर्णीतपदार्थसार्थानाचार्यवर्यान् परिपूजयामि ॥

ओं ह्रीं पञ्चाचारपरायणाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ

अर्थश्रुत सत्यविबोधनेन
द्रव्यश्रुत ग्रन्थविदर्भणेन ।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुसारा
स्तेऽध्यापका मेऽर्हणया दुहन्तु ॥१४॥

ओं ह्रीं द्वादशाङ्गपठनपाठनाद्यतायोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान्
स्वकर्मभूवीधविखण्डनेषु ।
विविक्तशय्यासनहर्म्यपीठ
स्थितान् तपास्विप्रवरान् यजामि ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशप्रकारचारित्राराधकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ

अर्हन्मङ्गलमर्चे सुरनरविद्याधरैकपूज्यपदम् ।
तोयप्रभृतिभिरर्घ्यैर्विनीतमूर्त्या शिवाप्तये नित्यम् ॥१६॥

ओं ह्रीं अर्हन्मङ्गलायार्घ

ध्रौव्योत्पादविनाशनरूपाखिलवस्तुबोधनार्थकरम् ।
सिद्ध मगलमिति वा मत्वार्चे चाष्टविधवस्तुभि ॥१७॥

ओं ह्रीं सिद्धमङ्गलायार्घ ०

यद्दर्शनकृतविभवाद् रोगोपद्रवगणा मृग इव मृगेन्द्रात् ।
दूर भजन्ति देश साधुभ्योऽर्ग्ये विधिना ॥१८॥

ओं ह्रीं सिद्धमङ्गलायार्घं ०

केवलिमुखावगतया वाण्या निर्दिष्टभेदधर्मगणम् ।
मत्वा भवसिन्धुतरीं प्रयजे तन्मंगल शुद्ध्यै ॥१९॥

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घ

लोकोत्तममथ जिनराट्पदाब्जसेवनयामितदोपनिलयाय ।
शश्व मत्वा धृतजलगन्धैरर्चे समीडित प्रभवे ॥ २० ॥

ओं ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमायार्घ

सिद्धाश्च्युतदोपमला लोकाग्र प्राप्य शिवसुख व्रजिता ।
उत्तमपथगा लोके तानर्चे वसुनिधार्चनया ॥ २१ ॥

ओं ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घ

इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रैरर्थिततपसा व्रतेपिणां सुधियाम् ।
उत्तममध्यानमसावर्चेऽह सलिलगन्धपुष्पै ॥ २२ ॥

ओं ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घ

रागपिशाचविमर्दनमन्त्र भवे धर्मधारिणामतुलम् ।
उत्तममपगतकामो धूपमर्चे शुचितर कुसुमै ॥ २३ ॥

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घ्यं०.........

अर्हच्छरणमथार्चेऽनन्तनमुत्तमपि न जातु सम्प्राप्तम् ।
नर्तनगानादिविधिमुद्दिश्याष्टकर्मणा शान्त्ये ॥ २४ ॥

ओं ह्रीं अर्हच्छरणायार्घ ० ---

निर्व्याबाधगुणाधिकमाप्य शरणं समेतचिदनन्तम् ।
सिद्धानाममृताना भृत्य पूजेयमशुभहान्यर्थम् ॥ २५ ॥

ओं ह्रीं सिद्धशरणायार्घ०

चिदचिद्भेद शरण लौकिकमाप्य प्रयोजनातीतम् ।
त्यक्त्वा साधुजनाना शरण भृत्य यजामि परमार्थम् ॥२६॥

ओं ह्रीं साधुशरणायार्घ

केवलिनाथमुखोद्गतधर्म प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्ट ।
तत्प्राप्त्य तद्यजन कुर्वे मलकर्मनाशाय ॥ २७ ॥

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घ

ससारदु खहनने निपुण जनाना
नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणम् ।
सपूजये विविधभक्तिभरावनम्र
शान्तिप्रद भुवनमुख्यपदार्थसार्थं ॥ २८ ॥

ओं ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्य समुद्दायार्घ ०

जयमाला

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा
अग्रे ~न वदन्ति भवन्तमिष्टम् ।

आनाद्यनन्तयुगवर्तिनमत्र मार्ये
विघ्नौघवारणकृतेऽहमपि स्मरामि ॥ १ ॥

गणाना मुनीनामधीशत्वतस्ते
गणेशाख्यया ये भवन्त स्तुवन्ति ।
तदा विघ्नसन्दोहशान्तिर्जनाना
करे सलुठत्यायतश्रेयसकाणाम् ॥ २ ॥

कले प्रभावात्कलुषाशयस्य
जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ।
प्रवर्तितोऽन्यो गणराजनाम्ना
लम्बोदरो दन्तिमुखो गणेश ॥३॥

रुद्रेण कामज्वलितेन गौर्या
विनोदभारान्मलमुत्प्रदाय ।
कृत पुराणेष्विति वारयित्वा
सन्मगल त कथमुद्गिरन्ति ॥४॥

यतस्त्वमेवासि विनायको मे
दृष्टेष्टयोगानविरुद्धवाच ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति
विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥५॥

जय जय जिनराज त्वद्गुणान्को व्यनक्ति
यदि सुरगुरुरिन्द्र कोटिवर्षप्रमाणम् ।

नदितुमखिलपद्मा पारमाप्नोति नो चेन्
कतिथ इह मनुष्य स्वल्पबुद्ध्या समेत ॥६॥

इति अर्हदादिसप्तदशमन्त्रे व्याख्य ०

श्रिय बुद्धिमनाकुल्य धर्मप्रीतिविवर्धनम् ।
जिनधर्मे स्थितिर्भूयान्छ्रेयो मे दिशतु त्वरा१ ॥७॥

इति पुष्पाञ्जलि ।

सकल्प

पूजा के बाद प्रतिष्ठाचाय जप करनेवालोंके हाथमें कुछ फल, अक्षत, चादी तथा फूल देकर अथवा कुछ न हो तो जल देकर निम्न लिखित सकल्प पढ़वावे—

'ओम् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे देशे प्रान्ते नगरे वर्षे मासे पक्षे तिथौ सम्वत्सरे जैनमन्दिरे कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थ इति मन्त्रस्य इति प्रमितस्य जापस्य सकल्पं कुर्म निर्विघ्नं समाप्तिर्भवतु अर्ह नम स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर हाथमें लिया हुआ सामान अथवा जल अपने सामने चढ़ा दे ।

प्रतिष्ठाचार्य सबके मुखसे मन्त्रका उच्चारण सुनकर यदि अशुद्ध हो तो शुद्ध करा दे। जप करनेवाले ६ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर निश्चित मन्त्रका जाप शुरू कर दें। जापके लिये शुद्ध धूप तैयार की जाय। बाजारकी अशुद्ध धूप अग्निमें क्षेपण पापका कारण है। जपमें जपकी प्रधानता है आहुतिकी नहीं, क्योंकि आहुतियाँ हवनके

---

१ जयमाला प्रतिष्ठापाठमें नहीं है, अत अन्यत्रसे सकलित की गई है।

साथ हो ही जाती हैं। प्रत्येक मालाकी समाप्तिपर धूपकी आहुति दाहिने हाथसे दी जा सकती है। अतः माला दाहिने हाथसे फेरना चाहिये। हवनमें आहुतिकी प्रधानता है, अतः आहुति दाहिने हाथसे देना चाहिये। जपवाले महाशयोंको नियमतः ब्रह्मचर्यसे रहना और शुद्ध भोजन करना चाहिये। परिणाम अत्यन्त निर्मल रखना चाहिये। जपवालोंकी देखरेखके लिये एक परिचारक पासमें नियुक्त रखना चाहिये। जपवाले परस्पर बातचीत न करें। जपके लिए जो संकल्प किया है उसे एक कागजपर लिखकर मध्य कलशके पास रख लेना चाहिए। एक व्यक्ति कागजपर जपका हिसाब लिखता रहे। निश्चित अवधिके भीतर अपना संकल्पित जप पूरा कर लेना चाहिये।

जापके कुछ मन्त्र

बृहच्छान्तिमन्त्र—

'ओम् णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

मध्य शान्तिमन्त्र—

'ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

लघु शान्तिमन्त्र—

'ओं ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

वेदीप्रतिष्ठा कलशारोहण तथा बिम्बस्थापनके समय जापमन्त्र—

उन्हें इन्द्र बनाया जावे। यदि इनकी पत्नी इन्द्राणी बनना चाहती हैं तो उसमें भी उक्त विशेषताएँ दोनों आवश्यक हैं। साथ ही छह माहसे अधिक गर्भवती अथवा अधिक छोटे बच्चेवाली न हो, अन्यथा विधि विधानमें आकुलता हो सकती है। इन्द्र इन्द्राणियोंको उत्तम पीतवस्त्र धारण करावे, मुकुट बाँधे तथा निम्नलिखित मन्त्र द्वारा रक्षासूत्र बाँधे।

'ओं नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा'।

फिर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अमृतस्नान करावे—

'ओम् अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सः क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा'।

(इस मन्त्रको पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र-इन्द्राणियों पर जलके छींटे डाले।)

तदनन्तर चन्दन, मुकुट, माला, केयूर हार, कुण्डल आदि उपलब्ध आभूषणोंको एक थालीमें रखकर मण्डलके सामने रखे और प्रतिष्ठाचार्य निम्नलिखित मन्त्र बोलकर उनपर पुष्प तथा पीले सरसों डाले—

ओं ह्रां णमो अरहंताणं ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं ओं ह्रूं णमो आइरियाणं ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं ओं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं इन्द्रइन्द्राण्यो-राभूषणानि पवित्राणि कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्रसे शुद्ध किये हुए चन्दन आदिको क्रमसे निम्नलिखित मन्त्र बुलवा कर धारण करावे—

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृतचञ्चरीकम्।
स्थाने नवाङ्के तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकारहेतो॥

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

एकत्र भास्वानपरत्र सोम सेवां विधातु जिनपस्य भक्त्या ।
रूपं परावृत्य च कुण्डलस्य मिषादवाप्ते इव कुण्डले द्वे ॥

(यह पढ़कर कानोंमें कर्णाभरण धारण करावे)

भुजासु केयूरमपास्तदुष्टजीयस्य सम्यक् जयकृद् ध्वजाङ्कम् ।
दधे निधीना नवकेश्च रत्नैर्विमण्डित सद्ग्रथित सुवर्ण ॥

(यह पढ़कर केयूर बाजूबंद धारण करावे)

यत्नार्थमेव सनतादिचक्रेश्वरेण चिन्हं निधिभूषणानाम् ।
यज्ञोपवीत विनत हि रत्नत्रयस्य मार्ग विदधाम्यतोऽहम् ॥

(यह पढ़कर यज्ञोपवीत पहिनावे)

अन्यैश्च दीक्षा यजनस्य गाढं कुर्वद्भिरिष्टै कटिसूत्रमुख्यैः ।
सभूषणैर्भूषयता शरीरं जिनेन्द्रपूजा सुखदा घटेत ।

(यह पढ़कर कटिसूत्र धारण करावे)

विधेर्विधातुर्यजनोत्सवेऽहं गृहादिमूर्च्छामपनोदयामि ।
अनन्यचेता कृतिमादधामि स्वर्गादिलक्ष्मीमपि हापयामि ॥

(यह पढ़कर घर गृहस्थीके कार्योंसे उत्सव पर्यन्त निवृत्त रहनेकी प्रतिज्ञा करावे)।

तदनन्तर नीचे लिखे अनुसार मण्डप प्रतिष्ठा करे ।

मण्डपप्रतिष्ठा

इन्द्र चतुर्निकाय देवोंको इस महोत्सवमें अपने २ भाग्य-नियोग को पूर्ण करने की सूचना करता है ।

चतुर्णिकायामरसंघ एष आगत्य यज्ञे विधिना नियोगम् ।
स्वीकृत्य भक्त्या हि यथार्हदेशे सुस्था भवन्त्वाह्निककल्पनायाम् ॥

(यह पढ़कर मण्डलके सामने पुष्प छोड़े ।)

(यह पढ़कर उत्तर दिशामें पुष्प छोड़ता हुआ उत्तर द्वारके प्रतीहारी 'पुष्पदन्त' को स्थापन दे।)

करकृतकुसुमानामञ्जलिं संवितीर्य
धनदमणिसुरत्नाधीशपूनार्थसार्थे।
विकिर विकिर शीघ्रं भक्तिमुद्भाव्य नूनं
निगदतु परमार्हे मण्डपोर्ध्वाग्निभागे ॥१०॥

(यह पढ़कर मण्डपके ऊपर सब रङ्गके पुष्पोंसे सहित अक्षत बरसावे।)

तदनन्तर ओं हूं फट् किरिटि किरिटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षां क्षः फट् स्वाहा।'

यह मन्त्र पढ़कर मण्डपकी दशों दिशाओंमें पुष्प अथवा पीली सरसों फेंके।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र बोलकर मण्डलके चारों कोनों पर फलादिसे भूषित चार मङ्गल कलश स्थापित करे। यदि चार न हों तो कमसे कम एक कलश अवश्य ही स्थापित करे।

'ओम् अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् ······ मासे पक्षे तिथौ वासरे वर्षे इह नगरे जैनेन्द्र-मन्दिरे कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतादि-बीजपूर शोभित मङ्गलकलशस्थापनं करोम्यहम्' क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

कलशके पास ही दीपक प्रज्वलित कर रक्खे। दीपक रखनेके पहले निम्न श्लोक और मन्त्र पढ़े—

स्थाने यथोचितकृते परिनद्धकक्षाः
सन्तु श्रियं लभत पुण्यसमानभाजाम् ॥४॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ अग्निकुमार देवोंका आह्वान करे)

नागाः समाविशत भूतलसन्निवेशा
स्वां भक्तिमुल्लसितगात्रतया प्रकाश्य ।
आशीविषादिकृतविघ्नविनाशहेतो
सुस्था भवन्तु निजयोग्यमहासनेषु ॥५॥

(यह पढ़कर पुष्प छोड़ता हुआ नागकुमार देवोंका आह्वान करे)

पुरुहूतदिशि स्थितिमिहि कराद्धृतकाञ्चनदण्डगदण्डरुचे ।
विधिना कुमुदेश्वर सन्ययस धृतपङ्कजशङ्कितकङ्कणक ॥ ६ ॥

(यह पढ़कर पूर्व दिशामें पुष्प छोड़कर पूर्वद्वारके प्रतीहारी 'कुमुदेश्वर' को स्थान दे।)

वामनाशु यमदिग्विभागतः स्थानमेहि नियतं स्वकर्मणि ।
भक्तिभारकृतदुष्टनिग्रह पूतशासनकृतामनध्वर ॥७॥

(यह पढ़कर दक्षिण दिशामें पुष्प छोड़ता हुआ दक्षिण दिशाके प्रतीहारी 'वामन' को स्थान दे)

पश्चिमासु विततासु हरित्सु भूरिभक्तिभरभृत्कृतपीठा ।
अञ्जनस्तहितकाम्ययाध्वरे तिष्ठ विघ्नविजय प्रणिधेहि ॥८॥

(यह पढ़कर पश्चिम दिशामें पुष्प छोड़ता हुआ पश्चिम द्वारके प्रतीहारी 'अञ्जन' को स्थान दे।)

पुष्पदन्तभवनामुरमध्ये सत्कृतोऽसि यत इत्थमतोऽद्य ।
उत्तरत्र मणिदण्डकराग्रस्तिष्ठ विघ्नविनिवृत्तिविधायी ॥ ९ ॥

अपराजितमन्त्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥
एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥
अर्हमित्यक्षरब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥

(यह पढकर थालीमें पुष्प छोड़, तदनन्तर निम्न श्लोक बोलकर नमस्कार मन्त्रको अर्घ चढ़ावे)

उदकचन्दनतन्दुल-पुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनमन्त्रमहं यजे ॥

ओं ह्रीं अनादिमूलमन्त्रायार्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इसके बाद निम्नलिखित अष्टदल कमल पूजाके भी अर्घ चढ़ावे)

अष्टदल कमलपूजा[१]

अर्हदादिपदाकारमोंकारं बिन्दुसंयुतम् ।
कामदं मोक्षदं वन्दे कर्मारातिलयप्रदम् ॥१॥

---

१ यह पूजा सकलचन्द्र द्वारा रचित है ।

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम् ।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा ॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि ।

इतना मंत्र पढ़ कर चुकनेके बाद नीचे लिखे अनुसार पूजा प्रारम्भ करें।

पूजा-स्थापन

ओम् जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
णमो अरहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमन्त्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् ।
" " अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
" " अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि । ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥

ओं ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तरायविनाशेन प्राप्तानन्तमहाबलम्।
वन्दे लोकशिरारूढं लोकातीतं सुनिश्चलम्॥ ८॥

ओं ह्रीं अन्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तदनन्तर संस्कृत या हिन्दी भाषाका पञ्चपरमेष्ठी विधान करें। विधान समाप्त होनेपर मङ्गल कलशके जलसे शान्तिधारा करें।

शान्तिधारा[1]

ॐ नमः सिद्धेभ्य श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीपार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यान पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनन्त दर्शनाय अनन्तवीर्याय अनन्तसुखाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाप्रमुखचतुःसंघोपसर्गविनाशाय घातिकर्मविनाशाय अघातिकर्मविनाशाय अपवादमस्माकं छिन्द २ भिन्द २ मृत्यु छिन्द २ भिन्द २ अतिकामं छिन्द २ भिन्द २ रतिकामं छिन्द २ भिन्द २ क्रोधं छिन्द २ भिन्द २ अग्निं छिन्द २ भिन्द २ सर्वशत्रु छिन्द २ भिन्द २ सर्वोपसर्गं छिन्द २ भिन्द २ सर्वविघ्नं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द सर्वभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वराजभयं छिन्द २ भिन्द २ भिन्द २ सर्वचोरभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वदुष्टभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वमृगभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वपरमन्त्रं छिन्द २ भिन्द २ सर्वआमयभयं छिन्द २ भिन्द सर्वशूलभयं छिन्द २ भिन्द २ सर्वक्षयरोगं छिन्द २ भिन्द २ सर्वकुष्टरोगं

---

[1] यह शान्ति धारा दि० जैनव्रतोद्यापनसंग्रहसे उद्धृत की गई है।

ओं ह्रीं मण्डलमध्यगताय पञ्चपरमेष्ठिरूपाय ओंकारायाघं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणसन्नाशलब्धानन्तसुबोधनम्।
वन्दे सिद्धं स्वयं सिद्धं कर्मशत्रुनिशोधनम् ॥२॥

ओं ह्रीं ज्ञानावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

दृगावरणसंघातसन्निपातानन्तदर्शनम्।
वन्दे सिद्धं जगत्कान्तं भव्यनन्तुनिहर्षणम् ॥३॥

ओं ह्रीं दर्शनावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद्यबाधासमालब्धाव्याबाधत्वमहागुणम्।
वन्दे सिद्धं स्मरारिद्धं क्षीणकर्मद्विपद्गुणम् ॥४॥

ओं ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहभूपालभूपातलब्धसम्यक्त्वसन्मणिम्।
वन्दे मुक्तं गुणैर्युक्तं राजज्ज्ञानदिवामणिम् ॥५॥

ओं ह्रीं मोहनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहगुणोपेतमायुःकर्मविनाशनात्।
वन्दे शुद्धं महाबुद्धं सिद्धं त्रैलोक्यदर्शनात् ॥६॥

ओं ह्रीं आयुःकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्मापहारेण सूक्ष्मत्वगुणशालिनम्।
वन्दे मुक्तिमहीकान्तं लोकत्रयनिभालिनम् ॥७॥

ओं ह्रीं नामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिनेऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्रगोत्रविदारणप्राप्तागुरुलघुत्वकम्।
वन्दे सिद्धिवधूस्वान्तमहामोहनकारकम् ॥ ८ ॥

माघनन्दिमुनिकृत-अभिषेक पाठ*

श्रीमन्नतामरशिरस्तटरत्नदीप्ति
तोयावभासिचरणाम्बुजयुग्ममीशम् ।
अर्हन्तमुन्नतपदप्रदमाभिनम्य
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये ॥१॥

अथ पौर्वाह्णिकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तववन्दनासमेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

या कृत्रिमास्तदितरा प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः ।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा
त्तत्रैनमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि ॥२॥

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्ति
सेन्द्राः सुरास्समदवारणगाः स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्ध्या
पुष्पाञ्जलिं मलयजातमुपाक्षिपेऽहम् ॥३॥

(यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि छोड़कर अभिषेककी प्रतिज्ञा करे)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः श्रीप्रस्तरे पूर्णशशाङ्ककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ॥४॥

---

* यह अभिषेकपाठ सर्व प्रथम पं० मोतीलाल जी वर्णी की ह० ल० पुस्तकसे संकलित किया गया था ।

आनन्दनिर्भरसुरप्रमदादिगानै-
र्वादित्रपूरजयशब्दकलप्रशस्तैः ।
उद्गीयमानजगतीपतिकीर्तिमेना
पीठस्थलीं वसुविधार्चनयोल्लसामि ॥१०॥

ओं ह्रीं स्नपनपीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे, शान्ति नाद तथा जय जय शब्दका उच्चारण करे)

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्त
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम् ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्त्वम् ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

(यह पढ़कर अभिषेक करे)

तीर्थोत्तमभवैर्नीरैः क्षीरवारिधिरूपकैः ।
स्नपयामि जन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान् ॥१२॥

ओं ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा ।

(यह पढ़ते हुए कलश से १०८ धारा छोड़े)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामि ।
यदभिषवनवारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां
प्रभवति विदधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम् ॥१३॥

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि ।

(यह पढ़कर अभिषेककी थालीमें केशरसे श्री लिखें ।

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।

स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि ।

(यह पढ़कर सिंहासन स्थापित करें)

भृङ्गारचामरसुदर्पणपीठकुम्भ

तालध्वजातपनिवारकभूषिताग्रे ।

वर्धस्व नन्द जय पाठपदावलीभिः

सिंहासने जिनभवन्तमहं श्रयामि ॥६॥

वृषभादिसुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान् ।

स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ ! भगवन्निह पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

(यह पढ़कर प्रतिमा विराजमान करें ।)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः

क्षीराब्धिवारिभिरपूरयदर्थकुम्भान् ।

तांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्

संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रे ॥८॥

शातकुम्भीयकुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान् ।

स्थापयामि जिनस्नानचन्दनादिसुचर्चितान् ॥९॥

ओं ह्रीं चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि ।

(यह पढ़कर चार कोनोंमें चार कलश रखे)

(यह पढ़कर प्रतिमाजीको शुद्ध और स्वच्छ वस्त्रसे पोंछे)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
निघृक्षुरिष्टिमिन नेऽष्टतयीं विधातु
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ॥१७॥

(यह पढ़कर प्रतिमाको सिंहासन पर विराजमान करे)

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः ।
फलैरर्घैर्जिनमर्चे जन्मदुःखापहानये ॥१८॥

ॐ ह्रीं पीठस्थिताय जिनाय निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च
व्यात्युक्षणेन हरतादघसंचयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्
भूयाद् भवातपहरं धृतमादरेण ॥१९॥

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवीराज्याभिषेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंवृद्धिसंपादकं
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम् ॥२०॥

(यह पढ़कर गन्धोदक शिरपर लगावे)

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते ।
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत् ।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्ति मन्त्रे णाभिषेकं करोमि ।

(यह पढ़कर दोनोंम रखे हुए चार कलशोंसे अभिषेक करे)

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुञ्ज
नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन ।
कर्माष्टकक्रथननीरमनन्तशक्ति
सपूजयामि महसा महसा निधानम् ॥१४॥

ओं ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशा
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम् ।
सद्द्रव्यहृज्जनितपङ्ककबन्धकल्पा
यूयं जिना सततशान्तिकरा भवन्तु ॥१५॥

(यह पढ़कर शान्तिके लिये पुष्पाञ्जलि छोड़े)

नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये
देहे स्थितान् जलकणान्परिमार्जयामि ॥१६॥

ओं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि

जल यन्त्र बनाने अथवा ताम्रपत्र आदि पर यन्त्र बना हो तो उसे उसी बर्तनमें डाल देवें। तदनन्तर वह जल साथमें लाये हुए घटोंमें भर ले। जल भरते समय निम्न लिखित मन्त्र बोले—

'ॐ ह्रीं श्री ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी शान्ति पुष्टयः श्रीदिक्कुमार्यो कलशमुखेष्वेतेषु नित्यविहिता भवत भवतेति स्वाहा'

गङ्गादयः श्रीप्रमुखाश्च देव्य

श्रीमागधाद्याश्च समुद्रनाथाः ।

हृदेशिनोऽन्येऽपि जलाशयेशा

स्नेसारयन्त्वस जिनोचिताम्भः ॥

यह श्लोक बोल कर जलाशयके तट पर पुष्प बिखेरे। तदनन्तर प्रारम्भमें छपा मङ्गलपञ्चक अथवा मङ्गलाष्टक बोल कर घटों पर पुष्प बिखेरे। यहाँ यदि समय हो तो आगे लिखे ८१ श्लोकों द्वारा उनके मन्त्रोंको चतुर्थ्यन्त (ॐ ह्रीं इन्द्रकलशायार्थं निर्वपामीति स्वाहा) बदलकर कलशपूजन करे। अन्यथा समुदायरूपमें एक अर्घ चढाकर यह श्लोक बोले। फिर कलश उठाकर जिस प्रकार ले आये थे उसी प्रकार वापिस ले जावे।

तीर्थेनानेनवीर्यान्तरदूरविभ्रामोदारदिव्य प्रभाव—

स्पृर्जत्तीर्थोत्तमस्य प्रथितजिनपते प्रेषितप्राभृताभान् ।

श्रीमुख्यप्रख्यातदेवीनिवहकृतमुखाधासनोद्भूतशक्ति—

प्रागल्भ्यानुद्धरामो जय जय निनद प्रातवृम्भीयकुम्भान् ।

यदि कलशारोहण होना है तो इन्द्र उस कलशको साथमें लेकर

६ मदीयाद् मल्लाद्यादशुभकर्माटनमभूत् ।
सदेदक पुष्पाहंत मम भवतु ते पूजनविधौ ॥२१॥

(यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि छोड़े)

अभिषेकके बाद नित्यपाठ बोले और उसके बाद सामूहिक रूपसे नित्यपूजा कर तथा यागमण्डलविधान करे। पूजाके बाद शान्ति, विसर्जन, स्तुति तथा परिक्रमा करे।

घटयात्रा और नगरकीर्तन

मन्दिर, वेदी तथा कलशाकी शुद्धिके लिये तीर्थजलकी आवश्य कता होती है। अतः किसी जलाशय पर गाजे बाजेके साथ जाकर जल लाना चाहिये। इस कार्यके लिये कमसे कम ६ और अधिक से अधिक ८१ घटोंका भरना बतलाया है। मालव आदि प्रान्तमें १०८ या २१, ४१, आदि कलश ले जाते हैं। घटोंको सूत तथा नारियल आदिसे बाँधकर इन्द्र इन्द्राणी तथा अन्य स्त्री-पुरुषोंके द्वारा जलाशय पर ले जाना चाहिये। वहाँ पीले पुष्पों अथवा पञ्चरङ्गोंसे रंगे चावलोंसे ८१ खण्डका एक मण्डल बनाना चाहिये। एक चौकोर मण्डल बनाकर उसमें नौ नौके नौ खण्ड बना देनेसे ६×६=८१ खण्डका मण्डल अनायास बन जाता है। उस सबमें एक-एक छोटा स्वस्तिक अथवा पूरे मण्डलमें एक बड़ा नन्द्यावर्त स्वस्तिक बनाकर उस पर सब घट रख देवें। चौकोर मण्डल के सामने एक नौ कलिकाओंका कमल बनावे और उसमें अरहन्त सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनशास्त्र, जिन गुरु, जिन प्रतिमा और जिन मन्दिर इन नौ देवोंकी स्थापना कर नव देवपूजन करे।

एक बड़े बर्तन या पतीलीमें जल छान कर भरवावे। उसमें लवंगका चूर्ण मिला दे जिससे अन्तर्मुहूर्त बाद फिरसे छाननेकी आवश्यकता न रहे। एक छोटी रकेबीमें केशरसे परिशिष्ट में लिखा

यमदण्डसमानाममर्लोरिक्रमणिनिर्मितम् ।
यमाख्ययमदिक्पालमान्य सच्चर्चयेऽनत्रम् ॥३॥
ओं ह्रीं यमकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३॥
नैऋत्याख्य महाकुम्भ नैऋत्याधिपरचितम् ।
सशब्दये जिनागार स्नानाय मधुरस्तवे ॥४॥
ओं ह्रीं नैऋत्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४॥
वरुणाख्य घट दिव्य वरुणासुररक्षितम् ।
सशब्दये जिनेन्द्रस्य वेश्मस्नानाय चम्पके ॥५॥
ओं ह्रीं वरुणकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५॥
पवनामरसंसेव्य पवनामरसुरचितम् ।
पवनाख्य घट नीरगन्धप्रक्षनशालिनि ॥६॥
ओं ह्रीं पवनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६॥
कुबेराख्य घट दिव्य कुबेरगृहशोभितम् ।
जिनवेश्मप्लवनायात्र समाह्वये कल्म्यके ॥७॥
ओं ह्रीं कुबेरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७॥
ईशानाख्यमुदाधारमीशादिदिग्विभासितम् ।
ओं ह्रीं तिष्ठदिग्गनेन वाग्मीरैस्तन्मह मुदा ॥८॥
ओं ह्रीं ईशानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥८॥
कुम्भ गारमताह्वान गरुत्मणिविनिर्मितम् ।
सरसैर्दिव्यपूजार्थे श्रये जैनमहोत्सवे ॥९॥

---

* यह विधान श्री ब॰ दरबारीलालजी कन्नी और प॰ मालचन्द्र जी की ह॰ लि॰ प्रतियोंसे लिया गया है ।

चले। हाथी मिल सकता है तो इन्द्र इन्द्राणियाँ कलश लेकर उस पर बैठें तथा नगरके खास खास मार्गोंमें प्रभावनाके साथ घूमकर नगर कीर्तन करें। नगर कीर्तनके समय प्रतिष्ठाचार्य मनमें शान्ति मन्त्रका उच्चारण करता हुआ सब ओर पुष्प अथवा पीले सरसों फेंकता रहे। जुलूसके अन्य स्त्री पुरुष मधुर स्वरसे स्तुति आदि पढ़ते जावें।

वापिस आनेपर यदि मन्दिर प्रतिष्ठा है तो मन्दिरकी शिखर पर, वेदी प्रतिष्ठा है तो वेदीपर और ध्वजारोहण है तो एक थालीमें कलशको रखकर उसपर नीचे लिखे श्लोक व मन्त्र बोलकर वह जल डालना चाहिये। मन्दिर शुद्धि आदिकी विधि यह है कि एक इतना बड़ा दर्पण रखा जाय जिसमें शिखर सहित मन्दिरका प्रतिबिम्ब आ जाय। फिर मन्दिरके प्रतिबिम्ब सहित दर्पणके सामने देखते हुए एक पात्रमें प्रत्येक घटसे एक एक धारा देवे, यदि एक साथ तीनों कार्य हों तो तीनोंकी शुद्धि भिन्न भिन्न व्यक्तियोंके द्वारा एक साथ कर लेना चाहिए।

शुद्धि विधान

८१ कलशोंके श्लोक और मन्त्र इस प्रकार हैं —

कुम्भमिन्द्राह्वय दिव्यमिन्द्र शास्त्रसमप्रभम्।
ऐन्द्रपुष्पे समर्चामि नराहंद्भवनोत्सव ॥१॥

ओं ह्रीं इन्द्रकलशेन मन्दिर (वेदिका ~ कलश) शुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१॥

अग्निज्वालासमानाभमग्न्याख्य बहुलाचितं ।
पूजयामि जिनागारस्नानाय सुखहेतवे ॥२॥

ओं ह्रीं अग्निकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२॥

चले। हाथी मिल सकता है तो इन्द्र-इन्द्राणियाँ कलश लेकर उस पर बैठें तथा नगरके खास खास मार्गोंमें प्रभावनाके साथ घूमकर नगर कीर्तन करें। नगर कीर्तनके समय प्रतिष्ठाचार्य मार्गमें शान्ति मन्त्रका उच्चारण करता हुआ सब ओर पुष्प अथवा पीली सरसों फेंकता रहे। जुलूसमें अन्य स्त्री पुरुष मधुर स्वरसे स्तुति आदि पढ़ते जावें।

वापिस आनेपर यदि मन्दिर प्रतिष्ठा है तो मन्दिरकी शिखर पर, वेदी प्रतिष्ठा है तो वेदीपर और कलशारोहण है तो एक थालीमें कलशको रखकर उसपर नीचे लिखे श्लोक व मन्त्र बोलकर यह जल डालना चाहिये। मन्दिर शुद्धि आदिकी विधि यह है कि एक इतना बड़ा दर्पण रक्खा जाय जिसमें शिखर सहित मन्दिरका प्रतिबिम्ब आ जाय। फिर मन्दिरके प्रतिबिम्ब सहित दर्पणके सामने खड़े हुए एक पात्रमें प्रत्येक घटसे एक एक धारा देवे, यदि एक साथ तीनों कार्य हों तो तीनोंकी शुद्धि भिन्न भिन्न व्यक्तियोंके द्वारा एक साथ कर लेना चाहिए।

शुद्धि विधान

८१ कलशोंके श्लोक और मन्त्र इस प्रकार हैं —

कुम्भमिन्द्राह्वय दिव्यमिन्द्र शस्त्रसमप्रभम् ।
ऐन्द्रपुष्पे समर्चामि नरार्हद्भवनोत्सवे ॥१॥

ओं ह्रीं इन्द्रकलशेन मन्दिर (वेदिका कलश) शुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१॥

अग्निज्वालासमानाभमग्न्याख्य बहुलार्चितं ।
पूजयामि जिनागारस्नानाय सुखहेतवे ॥२॥

ओं ह्रीं अग्निकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२॥

ओं ह्रीं गारुत्मतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥९॥

कलश सुन्दराकार वैडूर्यमणिनिर्मितम् ।
दिव्य मरकताभिख्य स्थापयेऽर्हद्गृहोत्सव ॥१०॥

ओं ह्रीं मरकतमणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१०॥

गाङ्गेयनिर्मित कुम्भ गाङ्गेयाख्य महोन्नतम् ।
गङ्गाघनरसापूर्णं पूजयेऽर्हत्सुरेश्मनि ॥११॥

ओं ह्रीं गाङ्गेयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥११॥

प्रतप्तहाटकैः स्पष्ट श्रीमद्धाटकसत्रकम् ।
कुम्भ तीर्थजलापूर्णमर्चयामि यथाविधि ॥१२॥

ओं ह्रीं हाटककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१२॥

हिरण्याख्य महाकुम्भं हिरण्मयेन समर्चितम् ।
ललत्पङ्कजमालाढ्य यजेऽर्हत्सद्मसमहे ॥१३॥

ओं ह्रीं हिरण्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१३॥

कनकनकसंकाश नानामणिविमण्डितम् ।
यजेऽर्हन्मन्दिरे कुम्भ शुद्धनीरसमाश्रितम् ॥१४॥

ओं ह्रीं कनककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१४॥

अष्टापदाख्य सत्कुम्भ हेमसत्कप्रविराजितम् ।
क्षीरोदवारिसंपूर्णमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे ॥१५॥

ओं ह्रीं अष्टापदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥१५॥

महारजतनामाढ्य महारजतनिर्मितम् ।
तीर्थाम्बुपूरनिर्भृतमर्हद्गेहेऽर्चये मुदा ॥१६

ॐ ह्रीं रत्नकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३०॥

हरिचन्दनपुष्पाभं हरिचन्दनसंज्ञकम् ।
हरिचन्दनकर्पूरं कुम्भं सम्प्रार्चये मुदा ॥३१॥

ॐ ह्रीं हरिचन्दनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३१॥

कल्पवृक्षमहापुष्पप्रकरेण प्रसाधितम् ।
कल्पवृक्षाभिधं कुम्भं पूजनाय प्रकल्पये ॥३२॥

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३२॥

जपाख्यं जपदामार्भं जपापुष्पाख्यमालरम् ।
यजे जगत्प्रभोर्नव्यचैत्यस्नानाय कलशम् ॥३३॥

ॐ ह्रीं जपाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३३॥

विशालाख्यं घटं दिव्यं विशालं रत्ननिर्मितम् ।
विशालयामि पुष्पौघैः कुन्दमन्दारसम्भवैः ॥३४॥

ॐ ह्रीं विशालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३४॥

कुम्भं श्रीभद्रकुम्भाख्यं भद्रेभकुम्भसुन्दरम् ।
पापभिद्प्रघनार्थे शोभयामि मनोहरे ॥३५॥

ॐ ह्रीं भद्रकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३५॥

घटं श्रीपूर्णकुम्भाख्यं पूर्णकुम्भशिरोन्नतम् ।
क्षीरोदनीरसम्पूर्णं सुरत्नैर्वर्धयाम्यहम् ॥३६॥

ॐ ह्रीं पूर्णकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥३६॥

ओं ह्रीं स्नानदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२३॥

कुन्दाख्यं कुन्दपुष्पाढ्यं कुन्दस्रक्प्रविराजितम् ।
प्रार्चये कुन्दपुष्पौघैः कुम्भं भव्यजिनालये ॥२४॥

ओं ह्रीं कुन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२४॥

प्रस्फुटन्मल्लिकापुष्पसमूहामोदवासिते ।
नीरैः पूर्णं यजे हेममल्लिकाख्यं महाघटम् ॥२५॥

ओं ह्रीं मल्लिकाख्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥

अपूर्वचम्पकामोदप्रवासितजलैर्भृतम् ।
चम्पकाख्यं घटं दिव्यं स्थापितं सम्यगर्चये ॥२६॥

ओं ह्रीं चम्पककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२६॥

कदम्बरजमाव्याप्तकदम्बाख्यं महाघटम् ।
उपालिप्तविधानेनार्चये जैनगृहालये ॥२७॥

ओं ह्रीं कदम्बकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२७॥

मन्दाराख्यं महाकुम्भं मन्दारस्रग्विभूषितम् ।
दिव्यैरचामि मन्दारे प्रत्यग्रजिनमन्दिरे ॥२८॥

ओं ह्रीं मन्दारकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२८॥

प्रत्यग्रपारिजातौघसमर्चितजलैर्भृतम् ।
पारिजातामिध कुम्भमर्चयामि पयोभरैः ॥२९॥

ओं ह्रीं पारिजातकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥२९

सन्तानपल्लवोत्फुल्लप्रसूननिकरान्वितम् ।
संतानाख्यं जलैः पूर्णं संस्थाप्यापूजयेऽनिशम् ॥३

ॐ ह्रीं उदयाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४३॥

हिमवत्पर्वतामिगम्य हिमाचलमनुन्नतिम् ।
कुटं निवेशयाम्यत्र स्नानाय नन्यवेश्मनः ॥४४॥

ॐ ह्रीं हिमाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४४॥

निषधाद्रिसमोत्सेधं निषधाग्व्य घटं वरम् ।
सन्निधापार्हणा दिव्यां स्थापयेऽर्हन्महोत्सवे ॥४५॥

ॐ ह्रीं निषधकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४५॥

माल्यवन्कुम्भनामानं नानामालाविराजितम् ।
शुद्धस्फटिकसङ्काशं कुम्भं तत्र निवेशये ॥४६॥

ॐ ह्रीं माल्यवत्कलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४६॥

सत्पारिपात्रकोत्सेधं सत्पारिपात्रसाह्वयम् ।
कलशं श्रीजिनागारस्नानाय पूजयेऽनघम् ॥४७॥

ॐ ह्रीं सत्पात्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४७॥

गन्धमादननामानं गन्धमादनपूरितम् ।
समाह्वये जलाद्यर्थैर्निर्नीरं स्नानहेतवे ॥४८॥

ॐ ह्रीं गन्धमादनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४८॥

सुदर्शनसमाह्वानं सुदर्शनगरिष्ठकम् ।
कलशं विशुद्धये जैनवेश्मनः स्थापयेऽनघम् ॥४९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥४९॥

कलशं मन्दराकारं मन्दराग्व्यं महोन्नतिम् ।
स्थापयामि जैनेन्द्रभवनस्नानहेतवे ॥५०॥

जयन्त सर्वकुम्भाना जयनाख्य महाघटम् ।
विकसज्जयपुष्पौघै संयनामि तदुत्सवे ॥३७॥

ओं ह्रीं जयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धि करोमीति स्वाहा ॥३७॥

वैजयन्ताभिध कुम्भ स य विजयदायकम् ।
नव्यप्रासादचर्यार्थं चर्चयेऽह चनादिभि ॥३८॥

ओं ह्रीं वैजयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धि करोमीति स्वाहा ॥३८॥

चन्द्र कान्तमहारत्नविनिर्मितमहाघटम् ।
चन्द्राख्य जगदुत्कृष्ट पूजये विधिवार्चनै ॥३६॥

ओं ह्रीं चन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धि करोमीति स्वाहा ॥३६॥

सूर्यकान्तारमसन्दोहविराजित महोदयम् ।
सूर्याख्य कुम्भमुत्कृष्टे प्रयजे तन्महार्घके ॥४०॥

ओं ह्रीं सूर्यकलशेन मन्दिरशुद्धि करोमीति स्वाहा ॥४०॥

लोकालोकाभिख्यात लोकालोकविधानकम् ।
कुम्भ सस्थापयाम्यत्र सपूज्य विधिवार्चनै ॥४१॥

ओं ह्रीं लोकालोककलशेन मन्दिरशुद्धि करोमीति स्वाहा ॥४१॥

त्रिकूटनामक कुम्भ त्रिकूटाद्रिसमानकम् ।
समर्च्य विधिवार्घेण स्थापये तन्महोत्सवे ॥४२॥

ओं ह्रीं त्रिकूटकलशेन मन्दिरशुद्धि करोमीति स्वाहा ॥४२॥

उदयाख्य महाकुम्भमुदयाचलसन्निभम् ।
स्थापयामि जिनागारेऽभिप्राय महोन्नतिम् ॥४३॥

कलश हरिताभिख्य हरिताश्मविनिर्मितम् ।
पूरयेद्दिव्यरत्नेन दिव्यगन्धाम्बुचम्पकैः ॥५८॥
ॐ ह्रीं हरितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५८॥

मृगेन्द्राह्वयमुत्तुङ्गं समाह्वायार्चनाविधिम् ।
मृगेन्द्रनलगर्भन्त स्नानशालेषु वश्मन ॥५६॥
ॐ ह्रीं मृगेन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥५६॥

कुम्भ नीलनदाकार श्रीमत्कौस्तुभाह्वयम् ।
निमग्नानीरसंपूर्णं घटयऽस्मिन्महोत्सवे ॥६०॥
ॐ ह्रीं काकनदककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६०॥

स्निग्धाञ्जनसमाकारमणिनिर्मितमुत्तमम् ।
कालाख्य कलशं हय तदुत्सवे निवशाय ॥६१॥
ॐ ह्रीं कालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६१॥

पद्मारव्य पद्मरागारव्य पद्मरागविनिर्मितम् ।
कुम्भ समाह्वये नव्यप्रसादस्नपनाय वै ॥६२॥
ॐ ह्रीं पद्मकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६२॥

अत्यन्तश्यामलाकारप्रस्तरैर्निर्मित घटम् ।
प्रासादस्नानशालेऽत्र महाकाल निवेशये ॥६३॥
ॐ ह्रीं महाकालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६३॥

पञ्चप्रकारसद्रत्ननिर्निर्मित महोन्नतम् ।
कलश सर्वरत्नाख्य स्नानाय श्रीजिनौकस ॥६४॥

ॐ ह्रीं सर्वरत्नकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७१॥

महाभिख्यं चतुरस्त्रं कुम्भं महसमर्चितम् ।
महतीर्थजलैः पूर्णं स्थापयेन्नीरचन्दनैः ॥७२॥

ॐ ह्रीं महाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७२॥

सुवर्णनिर्मितं कुम्भं सुवर्णाख्यं महासुखम् ।
स्फुरद्रत्नचयं चारु संस्थाप्याहं समर्चये ॥७३॥

ॐ ह्रीं सुवर्णकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७३॥

कदलीपत्रसंकाशं नीलाश्मरमयं घटम् ।
स्थापयामीन्द्रनीलाख्यं सम्भृततीर्थवारिणा ॥७४॥

ॐ ह्रीं इन्द्रनीलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७४॥

अशोककुसुमामोदभासिताम्भःप्रपूरितम् ।
अशोकाख्यमहाकुम्भं निधापये जिनौकसाम् ॥७५॥

ॐ ह्रीं अशोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७५॥

पुष्पदन्तसमानाभं पुष्पदन्तसमाह्वयम् ।
कलशं सलिलैः पूर्णं संस्थापयेऽर्हन्मन्दिरे ॥७६॥

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७६॥

कुमुदाख्यं घटं नव्यं कुमुदस्रग्विराजितम् ।
कुमुदैरर्चये स्नाने संस्थाप्य श्रीजिनौकसि ॥७७॥

ॐ ह्रीं कुमुदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७७॥

येषु दृष्टेषु भव्यानां सम्यक्त्वं प्रकटीभवेत् ।
दर्शनाख्यं महाकुम्भं समानये जलादिभिः ॥७८॥

ॐ ह्रीं सर्वरत्नकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६४॥

पाण्डुकाकारपाषाणनिर्मितं पाण्डुकाह्वयम् ।
कुम्भं तीर्थादिसम्पूर्णं निवेशये, यथाविधि ॥६५॥

ॐ ह्रीं पाण्डुकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोम्यहम् ॥६५॥

नैसर्पकाङ्कलाकारमणिनिर्मितमुन्नतम् ।
कुम्भं स्थापयाम्यत्र तीर्थवारिप्रपूरितम् ॥६६॥

ॐ ह्रीं नैसर्पकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६६॥

मानवाख्यं घटं नव्यमानये तीर्थवार्भृतम् ।
स्थापयेऽर्हन्महावेश्मस्नपनाय जलार्जितम् ॥६७॥

ॐ ह्रीं मानवकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६७॥

शङ्खसकाशरत्नौघविनिर्मितमहोन्नतिम् ।
सम्स्थाप्य पूजये दिव्यशङ्खाख्यं नलचन्दनैः ॥६८॥

ॐ ह्रीं शङ्खनिधिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६८॥

पिङ्गलाख्यं च पिङ्गाभं पिङ्गाश्मभिर्विनिर्मितम् ।
घटं तीर्थाम्बुसम्पूर्णं तदत्र सन्निवापये ॥६९॥

ॐ ह्रीं पिङ्गकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥६९॥

पुष्करावर्तनामानं कलशं रत्ननिर्मितम् ।
विनोदवासितस्नानालोकं सकल्पयाम्यहम् ॥७०॥

ॐ ह्रीं पुष्करावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७०॥

मकरध्वजनामानमिन्द्रनीलविधापितम् ।
शुद्धगङ्गाम्बुपर्याप्तं परितः स्थापयेद्वरम् ॥७१॥

अथवा दर्पणमें प्रतिबिम्ब देखकर यह विधि करे। शुद्धि के बाद घर्मात्मा जल अलगकर देना चाहिये।

रात्रिका समय नृत्य संगीत, शास्त्रप्रवचन तथा विद्वानों के भाषण आदिमें व्यतीत करना चाहिये।

(इस प्रकार द्वितीय दिनकी विधि पूर्ण हुई।)

तृतीय दिनका कर्तव्य

प्रातःकाल गत दिनके समान समारोहके साथ श्रीजिनेन्द्रदेव का अभिषेक तथा नित्य पूजा करे। तदनन्तर मन्दिर प्रतिष्ठा, वेदी प्रतिष्ठा और कलशारोहणकी अवशिष्ट क्रिया निम्नलिखित विधिसे पूर्ण करे—

प्रत्यूहनिर्णाशविधौ प्रसिद्धं गणेन्द्रवक्त्राम्बुजगीतकीर्तिम्।
यन्त्रं पुरापूजितमत्रनेय पात्रे लिखित्वापि कृतार्चनादि ॥

(यह पद्य पढ़कर विनायक यन्त्र वेदीपर लाकर विराजमान करे यदि विनायक यन्त्र न हो तो केशरसे बना लेना चाहिये तदनन्तर नीचे लिखा मन्त्र बोले -

'ओं जय जय जय निस्सही निस्सही निस्सही वर्धस्व वर्धस्व, स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति यर्हंतां जिनशासनम्। णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं। चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मोमंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि'।

(यह मन्त्र बोलकर वेदी पर पुष्प छोड़े)

(तदनन्तर नीचे लिखी आचार्य भक्ति और श्रुतभक्ति का पाठ करे।)

ओं ह्रीं दर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७८॥

यस्य दर्शनमात्रेण धर्मोऽधर्मं प्रबुध्यते ।
कुम्भ ज्ञानाख्यमुत्कृष्टं निवेशये जलैर्भृतम् ॥७६॥

ओं ह्रीं ज्ञानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥७६॥

दर्शनाद्यस्य भव्याना वृत्ते मति प्रजायते ।
चारित्राख्य वनै पूर्ण कुम्भं संस्थापये मुदा ॥८०॥

ओं ह्रीं चारित्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥८ ॥

सर्वार्थसिद्धिकर्तार सर्वार्थसिद्धिनामकम् ।
कुम्भ समर्चये जैनवेश्मन स्नानहेतवे ॥८१॥

ओं ह्रीं सर्वार्थसिद्धिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा ॥८१॥

इस प्रकार ८ कलशों के द्वारा शुद्धि करने के बाद निम्न मन्त्रों द्वारा शुद्धि करे।

'ओं ह्रीं वायुकुमार सर्वविघ्नविनाशनाय महींपूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा'
(यह मन्त्र बोलकर वेदीपर दर्भकी घनी कूचिका से मार्जन करे,

ओं ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं ह सं तं षं क्ष य हं फट् स्वाहा ।
(यह मन्त्र पढ़कर दर्भकी कूचिका से वेदीपर जल छींटे)

'ओं रं अग्निकुमार भूमिं ज्वलय ज्वलय अ ह सं तं षं क्ष ठ य हं फट् स्वाहा
(यह मन्त्र पढ़कर कपूर जलाकर वेदीपर डाले और उसे दर्भकी कूचिकासे सब जगह घुमावे)

'ओं हूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय परमन्त्रान् सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिंद छिंद भिन्द भिन्द
(यह मन्त्र पढ़कर मन्दिर की दशों दिशाओं मे पुष्प फेंके ।

सूचना—वेदी यदि कच्ची हो अथवा अधिक जल निकलनेका मार्ग न हो तो थोड़ा थोड़ा जल डालकर शुद्धिकर लेना चाहिये।

अथवा दर्पणमें प्रतिबिम्ब देखकर यह विधि करे। शुद्धि के बाद घर्मोंका जल अलगकर देना चाहिये।

रात्रिका समय नृत्य संगीत, शास्त्रप्रवचन तथा विद्वानों के भाषण आदिमें व्यतीत करना चाहिये।

(इस प्रकार द्वितीय दिनकी विधि पूर्ण हुई।)

तृतीय दिनका कर्तव्य

प्रातःकाल गत दिवसके समान समारोहके साथ श्रीजिनेन्द्रदेव का अभिषेक तथा नित्य पूजा करे। तदनन्तर मन्दिर प्रतिष्ठा, वेदी प्रतिष्ठा और कलशारोहणकी अवशिष्ट क्रिया निम्नलिखित विधिसे पूर्ण करे—

प्रत्यूहनिर्णाशविधौ प्रसिद्धं गणेन्द्रवक्त्राम्बुजगीतकीर्तिम्।
यन्त्रं पुरापूजितमग्रनेय पात्रे लिखित्वापि कृतार्चनादि ॥

(यह पढ़कर विनायक यन्त्र वेदीपर लाकर विराजमान करे यदि विनायक यन्त्र न हो तो केशरसे बना लेना चाहिये तदनन्तर नीचे लिखा मन्त्र बोले –

'ओं जय जय जय निस्सही निस्सही निस्सही वर्धस्व वर्धस्व, स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति वर्द्धतां जिनशासनम्। णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं। चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलि पण्णत्तो धम्मोमंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरहंत सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि'।

(यह मन्त्र बोलकर वेदी पर पुष्प छोड़े)

(तदनन्तर नीचे लिखी आचार्य भक्ति और श्रुतभक्ति का पाठ करे।)

आचार्य भक्ति

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता ।
तुम्ह पायपयोरुहमिह मंगलमत्थि मे णिच्चम् ॥१॥
सगपरसमयविदण्हू आगमहदूहिं चारि जाणित्ता ।
सुसमत्था जिणवयणे विणएण सुत्ताणुरूवेण ॥२॥
बालगुरुवुड्ढसेह गिलाणथेरेयसमणसंजुत्ता ।
अट्ठावयगाअण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता ॥३॥
वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुत्तिपहे ठावया पुणो अण्णे ।
अज्झावय गुणणिलया साहुगुणेणावि संजुत्ता ॥४॥
उत्तमखमाइ पुढवी पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा ।
कम्मिधणदहणादो अगणी वाऊ असंगादो ॥५॥
गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा ।
एरिसगुणणिलयाण पाय पणमामि सुद्धमणो ॥६॥
संसारकाणणे पुण बंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं ।
णिव्वाणस्स दु मग्गो लद्धो तुम्ह पसाएण ॥७॥
अविसुद्धलेसरहिया विसुद्धलेसेहिं परिणदा सुद्धा ।
रुद्दट्टे पुणचत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता ॥८॥
ओग्गह ईहावायाधारणगुणसंपएहिं संजुत्ता ।
सुत्तत्थभावणाए भावियमाणेहिं वंदामि ॥९॥
तुम्ह गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जं मए वुत्ता ।
दितु मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्च ॥१०॥

इच्छामिभत थाइरियभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणसम्मन्सणसम्मचरित्तजुत्ताण पंचविहाचाराण आयरियार्ण आयारादिसुदणाणोवदेसयाण उवज्झायाण तिरयणगुणपालण रयाण सव्वसाहूण णिच्चकाल अच्चेमि पूजेमि वदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमण समाहिमरण जिण गुणसम्पत्तिहोउ मज्झं।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ कर कायोत्सर्ग करे)

श्रुतभक्ति

अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचित द्वादशाङ्ग विशाल
चित्र बह्वर्थयुक्त मुनिगणवृषभैर्धारित बुद्धिमद्भि
मोक्षाग्रद्वारभूत व्रतचरणफल ज्ञेयभावप्रदीप
भक्त्या नित्य प्रवन्दे श्रुतमहमखिल सर्वलोकैकसारम् ।१
जिनेन्द्रवक्त्रप्रतिनिर्गत वचो यतीन्द्रभूतिप्रमुखैर्गणाधिपै ।
श्रुतधृतैस्तैश्चपुन प्रकाशित द्विषट्प्रकार प्रणमाम्यह श्रुतम् ॥२
कोटीशत द्वादशचैव कोट्यो लक्षाण्यशीतिस्त्यधिकानि चैव ।
पचाशदष्टौ च सहस्रसख्यमेतं श्रुत पञ्चपद नमामि ॥३॥
अङ्गबाह्यश्रुतोद्भूतान्यक्षराण्यक्षराम्नये ।
पञ्चसप्तैकमष्टौ च दशाशीतिं समर्चये ॥४॥
अरहतभासियत्थ गणहरदेवेहिं गथिय सम्म ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहिं सिरसा ॥५॥

इच्छामि भत्ते सुदभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ अंगोवंगपइण्णयपाहुडपरियम्मसुत्तपढमाणुओयपुव्वगयचूलिया चेव

वंदामि णमस्मामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ गमण समाहिमरण जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

(नौकार णमोकार मन्त्र पढ़ कर कायोत्सर्ग करें)

तदनन्तर जिनयज्ञ यन्त्र की पूजा कर निम्न लिखित 'महर्षि पर्युपासन' पढ़े।

महर्षि पर्युपासन

औषधीरसनलब्धितप स्था चेत्रबुद्धिकलिता क्रिययाढ्या ।
विक्रियर्द्धिमहिता प्रणिधानप्राप्तसत्तितिता मुनिपूज्या ॥१॥
कवलावधिमनःप्रसङ्गा बीजकोष्ठमतिभाजनशुद्धा ।
वीतरागमदमत्सरभावा बोधिलाभमनघा प्रदिशन्तु ॥२॥
यद्वचोऽमृतमहानदमग्ना जन्मदाहपरितापमपास्य ।
निर्वृतु सुखसमाजततषु बोधिलाभमनघा प्रदिशन्तु ॥३॥
श्रोतभिन्नमतय पदपन्था दृष्टसम्भृतिपदार्थविभावा ।
तत्त्वसकलितसर्वसुशुक्ला बोधिलाभमनघा प्रदिशन्तु ॥४॥
स्पर्शन रसणलोकनबुद्धा घ्राणसम्श्रवमनोपकृता ये ।
दूरतोऽप्यनुभवहितमाप्ता बोधिलाभमनघाः प्रदिशन्तु ॥५॥
भिन्नसर्वविभिन्ना चतुर्दशदिक्सुपूर्वमतिना निमित्तगा ।
वादिबुद्धिकृतिनो मतिश्रमा बोधिलाभमनघा प्रदिशन्तु ॥६॥
अष्टधोरतदशधाभिदया ये वृद्धिवृद्धिसहिता शिवयाता ।
निर्मलादिगदहापनदहा बोधिलाभमनघा प्रदिशन्तु ॥७॥
दृष्टरक्तमनसा निपभक्तिप्रीणिता श्रुतसारित्पतिपुष्टा ।
लोकमङ्गलिषु सन्यसिता ये बोधिलाभमनघा प्रदिशन्तु ॥८॥

राक्ष्यमानसबलेन समग्रा उग्रशीतनपसधिरगुप्ता ।
घोरवीर्यगुणभावितचित्ता योधिनाममनघा प्रदिशन्तु ॥९॥
दुस्समधमृत्रभोजनकृत्वा सर्पिरमृतविग्रोऽभि नियुक्ता ।
अक्षणालयरशिद्धगिदमा योगिनामममनघा प्रदिशन्तु ॥१०॥
रामस्पगुप्ताप्रतिमपान्तर्द्धर्यहीनबसतिविग्रहयुक्ता ।
चारणा जलफलाग्निरसाग्रा योधिनामममनघा प्रदिशन्तु ॥११॥
आमशक्तिभिराशगनसर्पपादगुलीयममताग्चुतमग्रा ।
सपरीषहभटार्दनग्भन्ते योधिनाममनघा प्रदिशन्तु ॥१२॥

ओं ह्रीं श्रष्टप्रकारसकलऋद्धिधारमेभ्यः मुनिभ्यश्च निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पद कर ऋद्धिधारी महर्षियों को अर्घ चढ़ावे)

आद्ये शितुर्वृषभसेनपुरस्सरा ये
सिंहासिन पुरतोऽजितनीर्थभर्तु ।
श्रीसंभवस्य किलचारुविसेन
मुख्यास्तुर्यस्य वज्रधरमुख्यगणाधिराजा ॥१॥
सौस्भ्यनस्य चमराधिपपूर्वगाः स्यु
पद्मप्रभस्य कुलिशादिपुरस्थिताश्च ।
श्रीसप्तमस्य वलमुख्यकृता पुराणे
चन्द्रप्रभस्य शमिन खलु दत्तमुख्या ॥२॥
मस्राङ्किनो गणभृतश्च विदर्भमुख्या
श्रीशीतलस्य गणपा अनगारगण्या ।

श्रेयोजिनस्य निकटेऽभवन् कुन्थुपूर्वा

धर्मादयो गणधरा वसुपूज्यसूनो ॥३॥

मेर्वादयश्च विमलेशितुरुद्धबुद्ध्या

जय्यार्यनामभरणाश्च चतुर्दशास्य ।

धर्मस्य सन्ति शमिनः सदरिष्टमला

श्चक्रायुधप्रभृतयः स्वतुशान्तिभर्तु ॥४॥

कुन्थुप्रभोर्यमभवत् कथिता स्वयम्भू

र्यो पुनस्तरनिभो स्मृतकुम्भमान्या ।

मल्लेर्विशाखमुनयो मुनिसुव्रतस्य

मल्लिप्रवेकगणपा नमिभर्तुरिष्टा ॥५॥

समृद्धिपूजितपदा सुप्रभागमुख्या

नेमीश्वरस्य वरदत्तमुखा गणेशा ।

पार्श्वप्रभो स्वयमिति शुभनान्तनाम्ना

वीरस्य गौतममुनीन्द्रमुखा पुनन्तु ॥६०॥

एभ्योऽर्घपाद्यमिह यत्नवरानर्घं

दत्त मया विलसता शुचिरेणिकायाम् ।

पुष्पाञ्जलिप्रकरतुन्दिलमाज्यपात्र-

मुत्तारयामि गुणिमान्यचरित्रभक्त्या ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरगणधरेभ्यश्चिदम्बाशासहित चतुर्दशशतावलम्बेभ्यश्चरणाग्रमर्घं कर्माधमुत्तारयामीति स्वाहा ॥

(यह पद्य पढ़कर २४ तीर्थकरों के १४५२ गणधरों को अर्घ चढ़ावें)

(तदनन्तर नीचे लिखी चारित्र भक्ति पढ़कर वेदी पर पुष्पाञ्जलि छोड़ें)

चारित्रभक्ति

संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिन
प्रत्यासन्नविमुक्तय सुमतय शान्तैनस प्राणिन
मोक्षस्यैव कृत विशालमतुल सोपानमुच्चैस्तरा—
मारोहन्तु चरित्रमुत्तममिद जैनेन्द्रमोजस्विन ॥१॥
तिलोए सव्वजीवाण हिय धम्मोवदेसणं ।
वड्ढमाण महावीर वदित्ता सव्ववेदिन ॥२॥
घाइकम्मविघादत्थ घाइकम्मविणासिणा ।
भासियभव्वजीवाणं चारित्त पचभेददो ॥३॥
सामायियं तु चारित्त छेदोवट्ठावण तहा ।
त परिहारविसुद्धि च सयम सुहुम पुणो ॥४॥
जहाखाय तु चारित्त तहाखाय तु त पुणो ।
किच्चाह पचहाचार मगल मलसोहण ॥५॥
अहिंसादीणि वुत्तानि महव्वयाणि पच य ।
समिदीओ तदो पच पचइ दियणिग्गहो ॥६॥
छब्भेयावासभूसिज्ज अण्हाणत्तमचेलदा ।
लोयत्त ठिदिभुत्तिच अदतवणमेव च ॥७॥
एयभत्तेण सजुत्ता रिसिमूलगुणा तहा ।
दसधम्मा तिगुत्तीओ सीलाणि सयलाणि य ॥८॥
सव्वेवि य परीसहा वुत्तुत्तरगुणा तहा ।
अण्णेवि भासिया सता तेसिं हाणीमयकया ॥९॥

जइ रागण दोसेण मोहण णदरण वा ।
वंदित्ता म गसिद्वाण सजुहा सा सुमुक्खुणा ॥१०॥
सजदण मए सम्म सव्वसनमभाविणा ।
स गसनमसिद्धीओ लब्भद मुत्तिज सुह ॥११॥
धम्मोमगलमुक्तिट्ठ अहिंसासनमो तओ ।
देवावि तस्स पणमति जस्सधम्मे सया मणो ॥१२॥

इच्छामि भंते चारित्तभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाणजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठियस्स सव्वपहाणस्स णिव्वाणमग्गस्स संजमस्स कम्मणिज्जरफलस्स खमाहरस्स पचमहव्वयमपण्णस्स तिगुत्तिगुत्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्स णाणज्झाणसाहणस्स समयाइ पवेसयस्स सम्मचरित्तस्स सदा णिच्चकाल अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमण समाहि मरण जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ कर कायोत्सर्ग करे)

(तदनन्तर निम्नलिखित अर्घ चढावे)

इन्द्रभूतिरग्निभूतिर्वायुभूति सुधर्मक ।
मौर्यमौऽढ्यौ पुत्रमित्रावकम्पनसुनामधृक ॥१॥

ओं ह्रीं गौतमादिएकादशमुनि योऽर्घ निर्वपामाति स्वाहा ।

अन्धवेल प्रभासश्च रुद्रसत्यान् मुनीनृयजे ।
गोतम च सुधमच जम्बूस्वामिनमूर्जगम् ॥२॥

ओं ह्रीं अन्त्यकेवलित्रयायार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दनन्दिमित्रोऽन्यौश्च विष्णुनन्त्यपराजितान् ।
गोवर्धनं भद्रबाहु दशपूर्वधर यजे ॥३॥

ॐ श्रुत केवलिभ्योऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शिशाख्योष्ठिलनक्षत्रनयनागपुरस्सरान् ।
सिद्धार्थधृतिषेणाह्वौ विजयबुद्धिबल तथा ॥४॥

ॐ ह्रीं कतिचिदङ्गधारि भ्योऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

गङ्गदत्त धर्मसेनमेकादश मुनीतान् ।
नक्षत्र नयपालाख्य पाण्डं च ध्रुवसेनकम् ॥५॥
कंसाचार्य पुरोङ्गीयनातार प्रयजेऽन्वहम् ।
सुभद्र च यशोभद्र भद्रबाहुं मुनीश्वरम् ॥६॥
लोहाचाय पुरा पूर्वाङ्गानचरधर नम ।
अर्हद्बलिं भूतबलिं माघनन्दिनमुत्तमम् ॥७॥
धरसेन मुनीन्द्र च पुष्पदन्तसमाह्वयम् ।
जिनचन्द्र कुन्दकुन्दमुमास्वामिनमर्थये ॥८॥

ॐ ह्रीं एतद्युगानदीक्षाधरणधुरन्धरनिग्रन्थाचार्यवर्येभ्यो व निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्ग्रन्थान्वकुशान् पुलाकवकुशान् किंशीलनिर्ग्रन्थकान्
मूलस्वोत्तरसद्गुणानधृतसा (?) किंचिद्विकारगतान् ।
वन्दित्वाजिनकल्पमुनिपदान् प्रध्वस्तपापोच्चयान् ।
वर्दीशुद्धिविविधदन्तु मुनयोऽर्घ्यर्घण सपूजिता ॥९॥

ॐ ह्रीं पुलाकवकुशकुशीलनिग्रन्थस्नातकपदधरत्रिकन्यूनैककोटि स स्यमुनिवरेभ्योऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(तदनन्तर मण्डप प्रतिष्ठा म लिखे हुए)

'चतुर्निकायामरसंघ एष'—आदि १० श्लोक पढ़ कर पुष्प छोड़े और।

'ओं ह्रूं फट् किरिटिं घातय घातय'—आदि मन्त्र पढ़ कर दशों दिशाओं में पुष्प या धान्य सरसों फेंके।

तदनन्तर वेदिका के ऊपर चढ़ाये हुए पुष्प आदि को अलग कर ले तथा विनायक यन्त्र भी दूसरी जगह विराजमान कर दे। वेदिका की भित्ति पर केशर से मातृका[1] मन्त्र लिखे और ऊपर की कटनी पर अचलयन्त्र रख कर उस पर श्री (मूल नायक) जिनेन्द्र देव की प्रतिमा विराजमान करे। उन पर छत्रत्रय लगावे। वेदिका को अष्ट प्रातिहार्यों तथा अष्टमङ्गल द्रव्य से सुशोभित करे। चन्दनमाला बाँधे। सिद्धयन्त्र, श्रुतस्कन्ध यन्त्र तथा चौंसठऋद्धि यन्त्र विराजमान करे। प्रतिमा जी विराजमान करने के बाद वेदी पर कलशारोहण तथा ध्वजारोहण करे।

वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा

मनुनाभिमहीधरजन्मभुवं मरुदच्युतराजतरन्तमहम् ।
प्रणिपत्य शिरोऽभ्युदयाय यजे कृतमुख्यनिमं वृषभं वृषभम् ।।१।।

ओं ह्रीं वृषभ जिनेन्द्रायाघ निर्वपामीति स्वाहा।

नितमनुगृह परिसूर्ययितुं व्यवहारदिशातनुभृद्भ्रमणम् ।
नयनिश्चयतन्मयमेत्य भुवं अजितं जिनमर्चतु यत्नपरम् ।।२।।

ओं ह्रीं अजितजिनेन्द्रायाघ निर्वपामीति स्वाहा।

---

[1] मातृका मन्त्र-ओं ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व श ष स ह क्ष्मीं ह्रीं ओं स्वाहा।

द्दग्गनगुत्रशनभोमिहिर त्रिजगत्त्रयभूषणमभ्युदयम् ।
जिनसभनमूर्धगाविद्रमर्चनया प्रणमामि पुरस्कृतया ॥३॥

ओं ह्रीं सुमत्र जिनेन्द्रायाध ० ।

कपिकेतनमीश्वरमर्थयतो मृतिजन्मजगपरिमोदयत ।
महितस्य महोत्सरसिद्धिमियादतएव यजे ह्यभिनन्दनम् ॥४॥

ओं ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्रायार्थं ० ।

सुमतिं जितमर्त्यमतिप्रस्रगर्वणमोऽर्थस्रराग्यमराशशिरम् ।
महयामि पितामहमेतदमिजगतीत्रयमूर्नितमक्तियुत ॥५॥

ओं ह्रीं सुमतिनाथाय जिनेन्द्रायाध० ।

घरणेगमर मरभागमित जलजप्रभमीश्वरमानमताम् ।
सुरसंपदियात न कति यजे चरणोपकण्ठे सुरदासभवे ॥६॥

ओं ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्रायार्थं ०

शुभपार्श्वजिनेश्वरपादभुवा रनमा श्रयता कमलाततय ।
कति नात्र भवन्ति न यत्नभुवि,
नयितु महयामि महत्त्वनिमि ॥७॥

ओं ह्रीं सुपार्श्व जिनेन्द्रायाध निर्वपामीति स्वाहा ।

मनसा परिचिन्त्य रिपु स्मरसात् ममशान्तिहृतिर्जिनदहघ्रणे ।
इति पादभुवभितरानिर त जिनचन्द्रपदाम्बुजमाश्रयत ॥८॥

ओं ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्रायाध ० ।

सुमदन्तजिन नत्रम सुनिनीतिपराह्णमखण्डमनङ्गहरम् ।
शुचिदहततिप्रसर प्रणुतात् सलिलादिगणैर्यजतां विधिना ॥९॥

* ओं ह्रीं पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अ० ।

* धन्यधान्यसमृद्धिरतीव यतो यनला भरतीन्मुरेन्द्रधरा ।
दशाभशर्मभरशान्तिकर पुष्पनामि महघ्नजिना प्रमुदा ॥१०॥

ओं ह्रीं शीतलजिन द्राय अ० ।

श्रेयोजिनस्य चरणौ परिधार्य चित्ते
मसारपञ्चतयदभ्रमणव्यपाय ।
श्रेयोऽर्थिना भवति तत्कृतये मयापि
सपूज्यते यजनमण्डिविधि प्रशस्य ॥११॥

ओं ह्रीं श्रेयाजिन द्राय अ० ।

इक्ष्वाकुवंशतिलको वसुपूज्यराजो
यज्जन्मजातकर्मिर्धो हरिणार्चितोऽभूत् ।
तद्वासुपूज्यजिनपार्चनया पुनीत
स्यामद्य तत्प्रतिकृतिं चरुभिर्यजामि ॥१२॥

ओं ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्राय अ० ।

काम्पिल्यनाथकृतवर्मगृहावतार
श्यामाजयाह्वजननीगुरुं नमामि ।
कोलध्वज विमलमीश्वरमर्घरेऽस्मि
न्नर्चे द्विरुक्तमलहापनकर्मसिद्ध्यै ॥१३॥

ओं ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय अ० ।

---

* यह श्लोक मूल प्रति म... कर जोड़ दिया है ।

साकेतनामनृपस्य च सिंहसेन
नाम्नस्तनूजममरार्चितपादपद्मम्।
सपूजयामि विविधाहणया ह्यनन्त
नाथं चतुर्दशजिनं सलिलाद्यर्घैः ॥१४॥

ॐ ह्रीं अनन्तजिनेन्द्राय ।

धर्मं द्विधोपदिशता सदसीन्द्रधार्ये
किं किं न नाम जनताहितमन्वदर्शि।
श्रीधर्मनाथ भवतेति सदर्थनाम
संप्राप्तयेऽर्चनविधिं पुरतः करोमि ॥१५॥

ॐ ह्रीं धर्मजिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीहस्तिनागपुरपालकविश्वसेन
स्याङ्के निवेश्य तनयामृतपुष्टितुष्ट
ऽयापि सा सुखरत्नशनिधानभूमि
र्यस्माद् बभूव जिनशान्तिमिहाश्रयामि ॥१६॥

ॐ ह्रीं शान्तिजिनेन्द्राय ।

श्रीकुन्थुनाथजिनजन्मनि षट्निकाय
जीवाः सुखं निरुपमं बुभुजुर्निशङ्कम्।
किं नाम सम्भृतिनिराकुलमानसोऽहं
भोक्ष्य न सत्वरमतोऽर्चनमारभेय॥१७॥

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथजिनेन्द्राय ।

सद्दर्शनप्लुतमुदर्शनभूपपुत्र
त्रैलोक्यजीवपररक्षणहेतुमित्रम्।

श्रीमित्रसेनजननीसनिरत्नमर्चे
श्रीपुष्पचिह्नमरनाथजिनेन्द्रमर्घ्यम् ॥१८॥

ओं ह्रीं अरनाथजिने द्रायार्घं ।

कुम्भोद्भवं धरणिदु स्हर प्रनाव
त्यानन्दकारकमतन्द्रमुनीन्द्रसेव्यम् ।
श्रीमल्लिनाथशिशुमघ्नरनिघ्नशान्त्यै
सपूजये जलसुचन्दनपुष्पदीपैः ॥१६॥

ओं ह्रीं मल्लिजिने द्रायार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

रानत्सुराजहरिवंशनभोनिवस्वान
वप्राम्बिकाप्रियसुतो मुनिसुव्रताख्य ।
सपूजये शिवपथप्रतिपत्तिहेतुमने
मया निजविवस्तुभिरर्हणेऽस्मिन् ॥२०॥

ओं ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्रायार्घं —

सन्मैथिलेशविजयाह्वगृहऽवतीर्णा
कल्याणपञ्चकसमर्पितपादपद्मम् ।
धर्माम्बुवाहपरिपोषितभव्यसस्य
नित्यं नमिं जिनवरं महसार्चयामि ॥२१॥

ओं ह्रीं नमिजिने द्रायार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वारावतीपतिसमुद्रजयेशमान्य
श्रीयादवेशबलकेशवपूजिताङ्घ्रिम् ।
शङ्खाङ्कमम्बुधरमेचकदेहमर्चे
सद्ब्रह्मचारिमणिनेमिजिनं जलाद्यैः ॥२२॥

ओं ह्रीं नमिजिने द्रायाघ ।

काशीपुरीशनृपभूपर्णनिरसेन
नेत्रप्रिय कमठशाठ्यविखण्डनेनम् ।
पद्माहिराननिबुधननपूजनाङ्क
नन्दऽचयामि शिरसा ननमर्मानिन. ॥२३

ओं ह्रीं पारवजिनेन्द्रायाघ ।

सिद्धार्थभूपतिगृहेन पुरस्त्रियाया
मानन्दताण्डवनिधौ स्वनु शशुभं ।
श्रीश्रेणिकेन सदसि ध्रुवभूपटाप्त्यै
यनेऽर्चयामि वरवीरजिनेन्द्रमीम्सि ॥२४॥

ओं ह्रीं श्री वधमानजिन द्रायाघ ।

अत्राहृत सुपर्णपर्णनिकरे (वेदी) मिम्बप्रतिष्ठोत्सव
सपूज्याश्चतुरुत्तरा जिनवरा विश्व सम्प्रति ।
सनाग्रत्समयादयैस्सुकृतानुद्धार्य मोक्ष गता—
स्तेऽत्रागत्य समस्तमध्वरकृत गृह्वन्तु पूजाविधिम् ।२५।

ओं ह्रीं वरुमान चतुर्विशतिजिनेभ्य पूर्ण निर्वपामीति स्वाहा ।

(१) कलशारोहण विधि *

कलशा को एक थाली में रखकर तख्त पर रक्खे। जल से स्नपन कर केशर लगावे माला पहिनावे तदनन्तर विनायक यंत्र की पूजा कर कलशा के लिये निम्न लिखित पाँच अर्घ चढ़ावे—

ओं ह्रीं षोडशजिनालयोद्भासितसुदर्शनमेरुसम्बन्धिचूलिकायै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं षोडशजिनालयोद्भासितविजयमेरु सम्बन्धि चूलिकायै अर्घ

ओं ह्रीं षोडश जिनालयोद्भासित अचल मेरु सम्बन्धि चूलिकायै अर्घं

ओं ह्रीं षोडश जिनालयोद्भासित मन्दर मेरु सम्बन्धि चूलिकायै अर्घ

ओं ह्रीं षोडश जिनालयोद्भासित विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि चूलिकायै अर्घं।

तदनन्तर भोजपत्र पर केशरसे अचल यन्त्र लिखकर कलशाके भीतर रख दे और कलशा पर केशरसे स्वस्तिक बनाकर—

'ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'

यह मन्त्र नौ बार पढ़कर कलशा पर पुष्प डाले तथा रक्षासूत्र बाँधे, महर्षिपर्युपासनका पाठ पढ़े।

तदनन्तर हवन और शान्तिधारा कर सिद्ध भक्तिपूर्वक 'ओं ह्रीं णमो सन्त सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा' यह मन्त्र पढ़ मन्दिरकी शिखर कलशारोहण करे। कलशाको मशालेसे पक्की कर दे। कलशारोहणके बाद 'ओं ह्रीं णमो अरहंताणं स्वस्ति

---

* कलशारोहणकी दूसरी विस्तृत विधि परिशिष्टमें दी है। अपनी रुचिके अनुसार कोई भी विधि करें।

भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा'। यह मन्त्र पढ़कर [illegible] चढ़ावें और शान्तिमन्त्र पढ़कर चारों ओर पुष्पवृष्टि करें।

हवन की विधि*

मण्डपमें वेदीके सन्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण [illegible] कुण्ड बनावे। यदि तीन कुण्ड बनवानेकी असुविधा हो तो [illegible] चौकोन कुण्ड बनाकर शेष दो कुण्डोंकी उसीमें स्थापना कर ले। यदि हवन में बैठनेवालोंकी संख्या अधिक हो तो अलगसे [illegible] बना लेना चाहिये। कुण्डपर इन्द्र इन्द्राणी और [illegible] बैठें। अन्य लोग स्थण्डिलों पर बैठ जावें। हवन के लिये [illegible] और समिधाएँ पहले से तैयार कर लें। हवन में [illegible] पहिनकर न बैठें। प्रारम्भ में सब सब लोग अपने [illegible] खड़े होकर मङ्गलाष्टक पढ़ते हुए कुण्डपर पुष्प छोड़ें। [illegible]

'ओं ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर कुण्डकी भूमिमें पुष्प छोड़े तथा [illegible] भूमिका मार्जन करें।

'ओं ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय [illegible] फट् स्वाहा'

(यह मन्त्र पढ़कर हवनकी भूमि-कुण्ड पर जल [illegible])

'ओं ह्रीं अग्निकुमाराय झ्म्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वल [illegible] तेजसे स्वाहा'।

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करें)

ओं ह्रीं अर्ह क्ष्मं ठ थं था पीठस्थापनं करोमि स्वाहा

(यह पढ़कर होम कुण्डके पश्चिम में पीठ [illegible])

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशान्तिं [illegible] करोमीति स्वाहा।

(यह पढ़कर पीठ पर जिनायक यन्त्र विराजमान करे) तद-नन्तर नीचे लिखे मन्त्रोंसे यन्त्रकी पूजा करे—अर्घ चढ़ावे।

ओं ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हं नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हं नमोनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त सुखेभ्यः स्वाहा।

तदनन्तर—

ओं ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे स्वाहा।

यह पढ़कर धर्मचक्रके लिये अर्घ चढ़ावे।

ओं ह्रीं श्वेतछत्रत्रयश्रियै स्वाहा।

(यह पढ़कर छत्रत्रयको अर्घ देवे)।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं हं सौं ह्रौं सकलशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहिता भव भव वषट्।

(यह मन्त्र पढ़कर सरस्वतीका आह्वान करे)।

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञानायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर सरस्वतीजिनवाणीको अर्घ देवे)।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र, चतुरशीतिलक्षोत्तरगुणाष्टदशसहस्रशीलधर गणधरचरण! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव।

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरुका आह्वान करे)।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तदन तर—

ओं ह्रीं होमाथ अग्निश्रयाधारभूतां समिधां स्थापयामि ।

(यह पढ़कर कुण्ड म समिधाए स्थापित कर)।

ओं ओं ओ ओं र रं रं र र अग्निं स्थापयामि

(यह पढ़कर कपूर जलाकर कुण्डम अग्नि स्थापन करे)।

निनेन्द्रमास्यपरिम सुप्रसन्नै

सशुष्कदर्भाग्रधृताग्निरीलै ।

कुण्डस्थिते सेन्धनशुद्धगर्ह्यौ

सधुक्षण सप्रति सतनोमि ॥

ओं ह्रीं ध्रीं र र र रं दर्भाग्निन ज्वलय ज्वलय मम फट स्वाहा ।

(यह पढ़कर डाभके पूलसे अग्निका संधुक्षण करे)।

श्री तीर्थनाथपरिनिर्वृतिपूतकाले

ह्यागत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्भिः ।

वह्निव्रजैर्जिनपदहमुदारभक्त्या

देहुस्तदग्निमहमर्चयितु दधामि ॥१॥

ओं ह्रीं चतुरस्रे तीर्थकरकुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कुण्डमें अर्घ चढ़ाव)।

गणाधिपाना शिवयातिकालेऽ

ग्नीन्द्रोत्तमाङ्गस्फुरदुग्ररोचि ।

सस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो

विघ्नौघशान्त्यै विधिना हुताश ॥२॥

ओं ह्री श्री वृत्ते द्वितीयगणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कुण्डमें अर्घ चढ़ावे)

श्री दक्षिणाग्नि परिकल्पितस्य
गिरीटदेशात्प्रणताग्निदेवं ।
निर्वाणकल्याणकपूतकाले
तमर्चय विघ्नविनाशनाय ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीं त्रिकाणे तृतीयमानाभ्यर्थविज्ञुरक दक्षिणाग्नये अर्घ निर्वपा०

(यह पढ़कर कुण्डमें अर्घ चढ़ावे)।

तदनन्तर—

शुद्ध घी से निम्नलिखित आहुतियाँ दवें।

ओं ह्रीं अर्हद्भ्य स्वाहा। ओं ह्रीं सिद्धेभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं सूरिभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं पाठकेभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं साधुभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं जिनधर्मेभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं जिनागमेभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं जिनबिम्बेभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्य स्वाहा। ओं ह्रीं सम्यक् चरित्राय स्वाहा॥

(साकल्यसे आहुतियाँ दे। मन्त्र के स्वाहा शब्द का उच्चारण स्पष्ट करे)।

पीठिका मन्त्र

ओं सत्य जाताय नमः स्वाहा। ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ओं अनुपम जाताय नमः स्वाहा। ओं स्वयंभुवाय नमः स्वाहा। ओं अचलाय नमः स्वाहा। ओं अक्षयाय नमः स्वाहा। ओं अव्याबाधाय नमः स्वाहा। ओं अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा। ओं अनन्त दर्शनाय नमः स्वाहा। ओं अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा। ओं अनन्तसुखाय नमः स्वाहा। ओं नीरजसे नमः स्वाहा। ओं निर्मलाय नमः स्वाहा। ओं अच्छेद्याय नमः स्वाहा। ओं

नम । श्रों अजराय नम स्वाहा । श्रों अमराय नम स्वाहा । श्रों अप्रमेयाय नम स्वाहा । श्रों अगर्भवासाय नम स्वाहा । श्रों अक्षोभाय नम स्वाहा । श्रों अविलीनाय नम स्वाहा । श्रों परमघनाय नम स्वाहा । श्रों परमकाष्ठायोगरूपाय नम स्वाहा । श्रों लोकाग्रनिवासिने नमो नम स्वाहा । श्रों परम सिद्धेभ्यो नम स्वाहा । श्रों अर्हत्सिद्धेभ्यो नम स्वाहा । श्रों ह्रीं केवलिसिद्धेभ्यो नमोनम स्वाहा । श्रों अन्तकृतसिद्धेभ्यो नमोनम, स्वाहा । श्रों परम्परा सिद्धेभ्यो नमोनम स्वाहा । श्रों अनादि परम्परासिद्धेभ्यो नम स्वाहा । श्रों अनाद्यनुपम सिद्धेभ्यो नम स्वाहा । श्रों सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्हअग्नीन्द्राय स्वाहा ।

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

(यह काम्यमन्त्र पढकर प्रतिष्ठाचार्य हवन करनेवालों पर पुष्प फेंके । अथवा जलके छींटे देवे)

जाति मन्त्रा

श्रों सत्यजन्मन शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों अर्हज्जन्मन शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों अर्हन्मातु शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों अनादि गमनस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों अनुपमजन्मन शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । श्रों सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा ।

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु अपमृत्यु विनाशन भवतु समाधिमरण भवतु स्वाहा ।

निस्तारकमन्त्रा.

श्रों सत्य जाताय स्वाहा । श्रों अर्हज्जाताय स्वाहा । श्रों षट्कर्मणे स्वाहा । श्रों ग्रामयतये स्वाहा । श्रों अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ।

श्रीं स्नातकाय स्वाहा। श्रीं श्रावकाय स्वाहा। श्रीं देवब्राह्मणार्यों स्वाहा। श्रीं सुब्राह्मणाय स्वाहा। श्रीं अनुपमाय स्वाहा। अ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

ऋषि मन्त्रा

श्रीं सत्यजाताय नमः स्वाहा। श्रीं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। श्रीं निर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा। श्रीं वीतरागाय नमः स्वाहा। श्रीं महाव्रताय नमः स्वाहा। श्रीं त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा। श्रीं महायोगाय नमः स्वाहा। श्रीं त्रिविधयोगायनमः स्वाहा। श्रा निविद्धये नमः स्वाहा। श्रीं अङ्गधरायनमः स्वाहा। श्रीं पूर्वधराय नमः स्वाहा। श्रीं गणधराय नमः स्वाहा। श्रीं परमर्षिभ्यो नमो नमः स्वाहा। श्रीं अनुपमजाताय नमः स्वाहा। श्रीं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

सुरेन्द्रमन्त्रा

श्रीं सत्यजाताय स्वाहा। श्रीं अर्हज्जाताय स्वाहा। श्रीं दिव्यजाताय स्वाहा। श्रीं दिव्यार्चिजाताय स्वाहा। श्रीं नेमिनाथाय स्वाहा। श्रीं सौधर्माय स्वाहा। श्रीं कल्पाधिपतये स्वाहा। श्रीं अनुचराय स्वाहा। श्रीं परम्परेन्द्राय स्वाहा। श्रीं अहमिन्द्राय स्वाहा। श्रीं परमार्हताय स्वाहा। श्रीं अनुपमाय स्वाहा। श्रीं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

परमराजादिमन्त्रा

श्री सत्यजाताय स्वाहा। श्रीं अर्हज्जाताय स्वाहा। श्रीं अनुपमन्द्राय स्वाहा। श्रीं विजयार्च्यनाताय स्वाहा। श्रीं नेमिनाथाय स्वाहा। श्री परमजाताय स्वाहा। श्रीं परमार्हताय स्वाहा। श्रीं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेज उग्रतेज दिशाञ्जन दिशाञ्जन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा।

सेवाफल षटपरमस्थान भवतु अपमृत्यु विनाशन भवतु समाधिमरण भवतु स्वाहा।

परमेष्ठिमन्त्रा

श्रीं सत्यजाताय नम स्वाहा। श्रीं अर्हज्जाताय नम स्वाहा। श्रीं परमजाताय नम स्वाहा। श्रीं परमार्हताय नम स्वाहा। श्रीं परमरूपाय नम स्वाहा। श्रीं परमतेजसे नम स्वाहा। श्रीं परमगुणाय नम स्वाहा। श्रीं परमस्थानाय नम स्वाहा। श्रीं परमयोगिने नम स्वाहा। श्रीं परधभाग्याय नम स्वाहा। श्रीं परमर्द्धये नम स्वाहा। श्रा परमप्रसादाय नम स्वाहा। श्रीं परमविज्ञानाय नम स्वाहा। श्रीं परमदर्शनाय नम स्वाहा। श्रीं परमवीर्याय नम स्वाहा। श्रा परमसुखाय नम स्वाहा। श्रीं परमसर्वज्ञाय नम स्वाहा। श्री अर्हते नम स्वाहा। श्रीं परमेष्ठिने नम स्वाहा। श्रीं परमनेत्रे नमोनम स्वाहा। श्रीं सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रैलोक्य विजय त्रैलोक्यविजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

सेवाफल षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशन भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

तदनन्तर—

जिस मन्त्रका जितना जप किया हो उसकी दशाश आहुतियाँ देना चाहिये। यह मन्त्र प्रतिष्ठाचार्य मनमें बोलकर स्वाहा शब्दका

माङ्गल्योत्सवा सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यंवर्धताम्, धर्मोवर्धताम्, श्रीर्वर्धताम्, कुलगोत्रं चाभिवर्धताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र चरणारविन्दे ध्यानन्दभक्ति सदास्तु।

तदनन्तर शान्तिपाठ और विसर्जन पाठ पढ़कर कलशा ले मचान पर चढ़ तथा नीचे लिखी सिद्धभक्ति बोले—

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघना उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायारमणायारा लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥१॥
मूलोत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तकम्मउम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा अट्ठगुणा तीदसंसारा ॥२॥
अट्ठवियकम्मवियडा सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा ॥३॥
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्धबुद्धी य लद्धिसब्भावा।
तिहुअण सिरिसेहरया पसियंतु भडारया सव्वे ॥४॥
गमणागमण विमुक्के विहडियकम्म पयडिसंघारा।
सासयसुहसंपत्ते ते सिद्धावंदियोणिच्चं ॥ ५ ॥
जयमंगलभूदाणं विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं णमो सदा सव्वसिद्धाणं ॥६॥
सम्मत्तणाण दंसण वीरिय सुहुम तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु अव्वावाह अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥७॥

ज्ञाता द्रष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा ।
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथासाध्यसिद्धि ।२
स्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमल सद्दर्शनज्ञानचर्या-
सम्पद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यञ्जिताचिन्त्यसारैः ।
कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्व लब्धि-
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ।।३।।
जानन्पश्यन्समस्त सममनुपरत सप्रतृप्यन् वितन्वन् ।
धुन्वन्ध्वान्त नितान्त निचितमनुसभ प्रीणयन्नीशभावम् ।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा ।
ह्यात्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन् सत्स्वयंभू प्रवृत्तः ।।४
छिन्दन् शेषानशेषानिगलबलकलीस्तैरनन्तस्वभावैः
सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ।
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवण विषय सम्प्राप्ति लब्धिप्रभावै-
रूर्ध्वव्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये ।।५
अन्याकाराप्तिहेतुर्नच भवति परो येन तेनाल्पहीन
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्त ।
क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजरानिष्टयोगप्रमोह-
व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहते कोऽस्य सौख्यस्य माता ।।६।।
आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालं
वृद्धिह्रासव्यपेत विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्वभावम् ।

अन्यद्रव्यानपेक्ष निरुपममभित शाश्वत सर्वकाल-
मुत्कृष्टानन्तसार परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य
नार्थ क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्न हि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात्
आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद्
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगततिमिर दृश्यमाने
तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतप सयमज्ञानदृष्टि-
चर्यासिद्धा समन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवा
भूता भव्या भवन्त सकलजगति ये स्तूयमाना
स्तान्सर्वान्नौम्यनन्तान्विनिगमिषुरर तत्स्वरूप

इच्छामि भंते सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ
णाणसम्मत्तसणसम्मचारित्तजुत्ताण अट्ठविहकम्म
गुणसम्पण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाण
सत्तमसिद्धाण अदीदाणागदवट्टमाणकालत्तय
सया णिच्चकालं अचेमि वदामि णमसामि दुक्खक्खओ
कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमण समाहिमरण
होउ मज्झ ।

णमो अरहताण णमो सिद्धाणं
णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण।

मध्याह्नके बाद अपने अपने
विमानयात्रा या रथयात्राका जुलूस
जाने । वहाँ समारोहके साथ

यदि पद्धति हो तो फूलमाल, झानमाल आदि घर जनताकी धार्मिक भावनाको वृद्धिगत करे। तदनन्तर उसी समारोहके साथ मण्डप में वापिस आवे।

रात्रिको नृत्य-गान, शास्त्रप्रवचन तथा समारोप भाषण आदिके द्वारा उत्सवकी समाप्ति करे।

(इस प्रकार तृतीय दिनकी विधि पूर्ण हुई)

(२) कलशारोहणविधि[१]

नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे ।
नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥१॥
जिनवाग्जैनता नत्वा गुरून् साधून् पुनः पुनः ।
कलशारोहणाचा वै करोमि जिनयज्ञकं ॥२॥
तत्रादौ गन्धकुट्यन्त सकलीकरणान्वित ।
देव शास्त्र-गुरूणा च पूजन कृत्वा ततः ॥३॥
महर्षीणा पर्युपास्य पञ्चकौमारपूजनम् ।
पञ्चसद्गुरुपूजां च शान्तिधारात्रय पुनः ॥४॥
अर्हत्सिद्धमुनीनाञ्चाष्टक कृत्वा पृथक् ततः ।
कुम्भस्य स्नपन गन्धलेपन मालयार्चनम् ॥५॥
तत्र पुष्पाञ्जलि क्षिप्त्वा सिद्धार्थकुशदर्भकान् ।
परिक्षिप्य जलै कुम्भ सेचनीय पृथक् पृथक् ॥६॥

---

१ यह विधि पं० बारेमालजी राजवैद्य, प्रतिष्ठाचार्य टीमकगढ़की हस्तलिखित प्रतियों परसे ली गई है।

सुर मेघकुमाराख्य पूजयेत्सलिलादिभि ।
पूजयेत्वास्तुदेवश्च समागयजपूजनम् ॥७॥
ध्वजादिरोहणं कृत्वा मन्त्रोच्चारणपूर्वकम् ।
मङ्गलद्रव्यविन्यास स्वकीयपरिपूजनम् ॥८॥
कुम्भे स्रग्धारण चव चन्दनैर्लेपन पुन ।
रक्षाभिधान पुण्याह घोषण स्वस्तिवाचनम् ॥६॥
आशीर्वादविसर्गौ च सर्षपान् मस्तके क्षिपेत् ।
मन्दिर त्रिकवार च परिक्राम्येत् मूर्धनि ॥१०॥
शिखरस्य स्वर्णकुम्भ शङ्कौ सस्थापयेत्पुन ।
जयनाद्यादिसोत्साह नृत्यगीतैर्महाजने ॥११॥
सयाग च महापूजा महादान पुन पुन ।
द्रव्यदान तु ताम्बूलै फलै सतोपयेत्कृती ॥१२॥

(उक्त श्लोकोंमे कलशारोहणकी विधि सकलित की गई है। बताया गया है कि गन्धकुटीके भीतर देव शास्त्र गुरुकी पूजा कर महर्षिपर्युपासनका पाठ करे। फिर वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व और वर्धमान इन पञ्च बालब्रह्मचारी तीर्थङ्करोंकी पूजा कर पञ्चपरमेष्ठी की पूजा करे। तदनन्तर तीन शान्तिधारा देकर अर्हन्त, सिद्ध और मुनियोंका अष्टक पढ़ कलशका जलसे स्नपन करे। उस पर केशर लगावे, माला धारण करे। फिर पुष्प छोड़कर उस पर पीले सरसों तथा कुशा डाल। शंकुदेव, कलश के सात नग और कलश पर चन्दन लगा माला पहिनावे। फिर रक्षामन्त्र, हवन पुण्याहवाचन शान्ति और विसर्जन कर कलश लेकर समूहके साथ जिस मन्दिर पर कलश चढ़ना है उसकी तीन प्रदक्षिणा देवें। अनन्तर बाजों

के शब्दके साथ कुरा पर कलशारोहण करे। दान देवे। आगत सद्धर्मी भाइयोंका सत्कार करे।)

कलशाको एक कोपरम रखकर मण्डपमें जिन प्रतिमाके समक्ष रक्खे। तदनन्तर देव शास्त्र गुरुकी पूजा कर 'महर्पिपर्युपासन' पढ़े। तदनन्तर नीचे लिखे श्लोक बोले—

वृषभोऽजितनामा च शम्भवश्चाभिनन्दन ।
सुमति पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनसत्तम ॥
चन्द्राभ पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनि ।
श्रेयाश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युति ॥
अनन्तो धर्मनामा च शान्ति कुन्थुर्जिनोत्तम ।
अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत् ॥
हरिवंशसमुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वर ।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वो नागेन्द्रपूजित ॥
कर्मान्तकृन्महावीर सिद्धार्थकुलसभव ।
एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विष ॥
पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभि ।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य शान्ति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥

(यह पढ़कर कलशा पर पुष्प वर्षा करे) तदनन्तर

वासुपूज्यस्तथा मल्लिर्नेमि पार्श्वोऽथ सन्मति ।
कौमारे पञ्च निष्क्रान्तास्तान्यजे विघ्नशान्तये ॥

ओं ह्रीं पञ्चकौमारनिष्क्रान्तजिनेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन् सिद्धस्तथा सूरिरध्यायोऽथ सन्मुनि ।
पञ्चैते गुरवो नित्य समाराध्या घटोत्सवे ॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तदनन्तर—

ओं नमोऽर्हते भगवते शान्तिनाथाय सर्वशान्तिकराय सर्वक्षुद्रोपद्रवनाशनाय सर्वपरकृतपरचक्रविध्वंसनाय जिनमतसूर्योद्योतनाय मम । जरा छिन्द छिन्द जन्म छिन्द छिन्द, वैरिण छिन्द छिन्द, रिपु छिन्द छिन्द, सपद्रिचिसमय छिन्द छिन्द ।

शत्रवो निधन यान्तु हतास्ते परिपन्थिन ।
सुखमायु सदा चैव प्रतापोऽप्रतिमोऽस्तु च ॥

(यह पढ़कर तीन बार शान्तिधारा दव)

(तदनन्तर नीचे लिखा अष्टक पढ़कर जलादि आठ द्रव्य चढ़ाव)

अर्हत्सिद्धमुनीना च शर्मा परमपावनौं ।
व्योमगङ्गानलै पूतैर्यजेऽह कलशोत्सवे ॥१॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति० ।

अर्हत्सिद्धमुनीना च शर्मा प मपावनौं ।
चन्दनमिश्रोदकात्रै यजेऽह कलशोत्सवे ॥२॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यश्चन्दन निर्वपामीति० ।

अर्हत्सिद्धमुनीना च शर्मा परमपावनौं ।
सदक्षतैर्द्दिव्यैर्यजेऽह कलशोत्सव ॥३॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽक्षत निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हन्सिद्धमुनीनां च कर्मा परमपावनौं ।
कुन्दादिसमुदायैश्च यजेऽहं कलशोत्सवे ॥४॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति

अर्हत्सिद्धमुनीना च कर्मा परमपावनौं ।
चरुभिः स्वर्णकस्थाल्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥ ५॥

ओं ह्रीं अ॰त्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नैवद्यं निर्वपामीति

अर्हत्सिद्धमुनीना च कर्मा परमपावनौं ।
प्रदीपैर्घृतपूराढ्यैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥६॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति

अर्हत्सिद्धमुनीनां च कर्मा परमपावनौं ।
धूपैर्धूपतिधूमाग्रैर्यजेऽहं कलशोत्सवे ॥७॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति

अर्हन्सिद्धमुनीनां च कर्मा परमपावनौं ।
मोचन्चोचफलाद्यैश्च यजेऽहं कलशोत्सवे ॥८॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य फलं निर्वपामीति

जल.गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः
फलैरर्घैर्महापूतैरर्हत्सिद्धमुनीन् यजे ॥६॥

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति

(तदनन्तर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शान्तिधारा दे

ओं श्रीमन्तो भगवन्तो सर्वज्ञा सर्वदर्शिनस्त्रिलोकेश्वर
महिमानस्त्रिलोकमध्ये तीर्थंकरा भगवन्तोऽर्हन्त परमरूपमाद

श्रयनाना तन प्रतापनलवीर्यलक्ष्मीभाग्यसौभाग्यकरा भवन्तु । ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अनपमरा भवन्तु सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं वलवीर्यं च कुर्वन्तु स्वाहा ।

(शान्तिधारा देवे)

यन्त्रप्रस्थापितस्वर्णभृङ्गनिर्यातसज्जलै ।
सेचयामि महोऽत्साहात्स्वर्णकुम्भमहोत्सव ॥

ओं ह्रीं भृङ्गारादिकलशक्षालन करोमीति स्वाहा ।

(यह पढकर कलश पर जल धारा डाले)

हमोमक्त्वसत्कुम्भैश्चन्दनादिसुगन्धितै ॥
देवाराध्यननोत्साह स्नपन ते करोम्यहम् ॥

ओं ह्रीं सुगन्धितसलिलेन कलशक्षालन करोमीति स्वाहा ।

(यह पढकर कलशा पर सुगन्ध की धारा डाले)

पुन पुन विलिम्पामि निलिप्त गणपूजितम् ।
स्वर्णकुम्भमहोत्साहे यजेऽह जिनमन्दिरम् ॥

ओं ह्रीं चन्दनेन पुनर्लिम्पन करोमीति स्वाहा ।

(यह पढकर कलशा पर चन्दन लगावे)

क्षीरार्णवजलै शुभ्रै सुगन्धै रससयुतै ।
कलशान् शोधयेत्सम्यक् स्थैयार्थ मन्दिरोपरि ॥

ओं ह्रीं जलेन कलश परिषेचयामीति स्वाहा ।

(यह पढकर कलशा पर जलके छींट देवे)

जिनमन्दिररक्षार्थं कुम्भादीना च रोहणम् ।
करोमि द्योतनार्थं च पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् तत

ओं ह्रीं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(यह पढ़कर कलश पर पुष्प छोड़े)

सिद्धार्थकुशदर्भादीन् क्षेपयामि समन्ततः ।
तेन चैत्यगृहद्वारे रक्षार्थमुत्तमान् ॥

ओं ह्रीं सिद्धार्थकुशदर्भान् समन्तात् सर्वदिक्षु कुम्भोपरि परिक्षिपामि

(यह पढ़कर कलशके चारों ओर पीली सरसों तथा कुशा आदि डाले।)

लोहरूपमहाशङ्को वैरवशक्तिनाशक ।
शिखरे त्वं निषीदात्र महाभक्त्या स्थितो भव ॥

ओं ह्रीं हे शङ्को अत्रागच्छ तिष्ठ २ तिष्ठ ठः ठः सन्निहितो भव भव वषट्।

(यह पढ़कर पुष्प छोड़े।)

अनेकान्तमतोद्योतप्रचण्डो व दिवामणिः ।
एव वितर्कक शङ्कु चायं पुण्यशोत्तमे ॥

ओं ह्रीं शङ्कवचनं करामि।

हेमकुम्भमहास्थालीं पूजये निश्चितो मुदा ।
जिनमन्दिरनिर्माणे रक्षार्थं तदुपद्रवात् ॥

ओं ह्रीं हेमकुम्भस्थालीपूजनं करामीति स्वाहा।

स्थाल्या उपरिमे भागे सच्चामीकरचक्रिकाम् ।
स्थापयेऽहं निर्विघ्नं मुखे च कलशोत्सवे ॥

ओं ह्रीं प्रथमस्थाने हेमकलशादिपीठेन चक्रिकास्थापनं करोमीति स्वाहा।

चन्द्रिका हि समर्चामि धर्मचक्रसमन्विताम् ।
पूजयेत्कलशोद्धारे जिनमन्दिररक्षणात् ॥
ॐ ह्रीं हेमकलशपार्श्वे चन्द्रिका पूजनं करोमीति स्वाहा ।

हेमपद्मं स्थितं दव स्थगेमि हेमपद्मवत् ।
जिनमन्दिरमूर्धस्थ स्थिर तिष्ठ दिवानिशम् ॥
ॐ ह्रीं हेमपद्मस्थापन करोमीति स्वाहा ।

हेम पद्मनिभ हेमपद्मकुम्भ समर्चयेत् ।
प्रतिष्ठाथा विधौ नित्य जलगन्धाक्षतादिभि ॥
ॐ ह्रीं हेमपद्मस्थापन करोमीति स्वाहा ।

हिरण्मया चन्द्रिका पूजये विधितोऽप्यहम् ।
जिनमन्दिरमूर्धस्था परिपूर्णिप्रचन्द्रिकाम् ॥
ॐ ह्रीं हिरण्मयचन्द्रिकास्थापन करोमीति स्वाहा ।

हेमकुम्भमह स्थाली चन्द्रिकोपरि सुस्थिराम् ।
करोमि विधिवत्पूजा तस्या कुम्भमहोत्सवे ॥
ॐ ह्रीं हिरण्मयचन्द्रिका पूजां करोमीति स्वाहा ।

हम कुम्भमह स्थाली पूजयेद्विधिवो मुदा ।
जिनमन्दिरनिर्माणे रक्षार्थं तदुपद्रवात् ॥
ॐ ह्रीं हेमकुम्भस्थालीपूजन करोमीति स्वाहा ।

पष्ठस्थाने हि सुस्थाप्या सन्चामीकरचन्द्रिका ।
चन्द्रिकापूजन कुर्वे शान्त्यर्थं कलशोत्सव ॥
ॐ ह्रीं चामीकरचूलिकापूजन करोमीति स्वाहा ।

शालकुम्भमयी कुम्भे सस्थाप्या चूलिका वरा ।
सा कुम्भचूलिका प्रोक्ता ता कुर्वे सुमगस्थिताम् ॥

ओं ह्रीं सप्तमस्थाने स्वर्णकुम्भचूलिकास्थापन करोमीति स्वाहा ।

जलगन्धाद्यतैं पुष्पैरष्टद्रव्यमनोहरैः ।
हेमकुम्भमहं कुम्भचूलिका पूजये मते ॥

ओं ह्रीं हेमकुम्भ चूलिका पूजन करामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कलशाके नगोंकी पूजा कर)

तदनन्तर कलश पर चन्दन लगाकर नीचे लिखा श्लोक पढ़कर माला पहिनावे ।

श्रुतिदूतीसमा सस्ते मूर्धनि स्नात्समा नरा ।
वैराग्यजननोत्साह मिथ्यादृष्टमदमर्दनम् ॥

ओं ह्रीं कलशोपरि माला धारयामीति स्वाहा ।

तदनन्तर—

सन्धारण गन्धलेप सर्वाङ्गयनचर्चनम् ।
रक्षाभिधानमुद्घोष्य स्थापये कलश जिना ॥

यह पढ़कर मन्त्र और पुष्प छोड़े, शान्ति हवन करे ।

तदनन्तर समय हो तो मन्दिरकी तीन प्रदक्षिणाएँ देकर शिखर पर चढ़े और 'ओं ह्रीं णमो सवसिद्धाण सिद्धचक्राधिपतये स्वाहा' यह मन्त्र पढ़कर कलश चढ़ा दे। सिद्धिभक्ति पढ़े और शान्तिके लिए चारों ओर पुष्पवर्षा करे। मन्दिरकी स्थायी व्यवस्थाके लिए यजमानसे स्थायी सम्पत्तिका दान करावे ।

ध्वजारोहण

ओं णमो अरहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा

(यह मन्त्र पढ़कर मन्दिर पर ध्वजा चढ़ावे।)

ध्वजा की ऊँचाई और फल का वर्णन

*कलशादुच्छ्रिते हस्तं ध्वजे नीरोगता भवेत्।
द्विहस्तमुच्छ्रिते तस्मात्पुत्रवृद्धिर्जायते परा॥
त्रिहस्ते तस्य सम्पत्तिर्नृपवृद्धिश्चतुष्करम्।
पञ्चहस्ते सुभिक्षं स्याद् राष्ट्रवृद्धिश्च जायते॥
अम्बरेण कृतो यस्स्याद् ध्वजः सम्यक् समन्ततः।
सोऽतिलक्ष्मीप्रदो राज्ये यशःकीर्तिप्रतापदः॥
भूपालबालगोपालललनानां समृद्धिकृत्।
राजा सुखार्थदायी च धान्यैश्वर्यनयावहः॥

अर्थात् मन्दिरकी शिखरके कलशोंसे एक हाथ ऊँची ध्वजा आरोग्यता करती है, दो हाथ ऊँची पुत्रादि सम्पत्तिको, तीन हाथ ऊँची धान्यसम्पत्तिको, चार हाथ ऊँची राजाकी वृद्धिको और पाँच हाथ ऊँची सुभिक्ष तथा राज्यवृद्धिको करती है। वस्त्रसे बनी ध्वजा अत्यन्त लक्ष्मीको देनेवाली तथा राज्यमें यशको फैलानेवाली होती है और राजा प्रजा सबको सुखदायी है।

---

* आशाधर प्रतिष्ठापाठ अध्याय ५ श्लोक ७४–७६

खान मुहूर्त तथा नीव भरने की विधि*

जहाँ मन्दिर अथवा वदीकी नीव खोदी हो वहीं शुभ मुहूर्तमें खान मुहूर्त करना चाहिये। इस समय एक तख्त या चौकी पर विनायक यन्त्र विराजमान करे पूजन करे। तदनन्तर याजकके हाथ से नये गेंती फरएसे खान मुहूर्त करावे।

मन्दिरके चारो ओर और बीचमे जब नींव खुद चुके तब पाँचों स्थानों पर अथवा किसी स्थान पर मङ्गलाष्टक पढ़कर पुष्प छोड़े। फिर निश्चित दिशा और मुहूर्तमें नींवके गड्ढेके पास याजक और उसकी पत्नीसे पूजा करावे।

'ओं ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशाय महीं पूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

(यह पढ़कर पृथिवीका दर्भपूलसे मार्जन करे।)

ओं ह्रीं मेघकुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं ह सं व झ प स स्व फट् स्वाहा।

(यह पढ़कर दर्भपूलमें जल लेकर भूमिको सींचे।

'ओं र अग्निकुमाराय भूमि ज्वलय ज्वलय अं ह सं प भं ठ य क्षः फट् स्वाहा'

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमिको सतप्त करे')

ओं ह्रीं क्रीं षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा'

(यह पढ़कर पृथिवीको जलसे मा चे)

'ओं हूं फट् किरीटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फाटय स्फोटय पर मन्त्रान् सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द'

---

* इस प्रकरणकी अधिकांश सामग्री प० बारेलालजी के सङ्कलनसे संगृहीत है।

(यह पढ़कर दशों दिशाओंमें पुष्प मिश्रित पीले सरसों खिेरे ।
तदनन्तर 'चतुर्णिकायामर संघ एष' इत्यादि श्लोक बोलकर पुष्पक्षेपण करे।

फिर एक ओर यदि एक जगह खुदी हो तो एक जगह विनायक यन्त्रके समान पहले वलय में ॐ, द्वितीय वलयमें अ, सि,आ, उ, सा के पाँच कोठे और तीसरे वलयमें अरहंता मंगलं-आदि के १२ कोठे बनाकर विनायकयन्त्रका पूजन करे, नव देव पूजन करे। फिर महर्षिपर्युपासन—का पाठ बोले। तदनन्तर यदि पाँच जगह नींव खुदी हो तो हर एक जगह एक एक कलश जिस पर केशरसे साथिया लिखे हो, लेकर [illegible] सर्वौषधि, पञ्चरत्न, पीला सरसों, हल्दी सुपारी सुगन्धित आदि मंगल द्रव्योंसे भरे। इसके भीतर घृतके दीपक [illegible] कर द्रव्य रख दे। फिर पाट डालकर उस पर व कलश [illegible] बीचके कलशके नीचे एक शिलापर विनायक यन्त्रके [illegible] ताम्रपत्र पर निम्नलिखित प्रशस्ति खोदकर रख दे।

ओं श्री कुन्दकुन्दाम्नाये मूलसंघे सरस्वतीगच्छे [illegible] —— वर्षे,—— मासे—— पक्षे—— तिथौ—— [illegible] —— श्रेष्ठिभि जिनमन्दिरस्याङ्क [illegible] स्वस्ति भवतु'

तदनन्तर पाषाणकी एक चतुष्कोण [illegible] पवित्र करे और इस मन्त्रसे २७ बार मन्त्रित [illegible] रक्षासूत्रसे वेष्टित करे। तदनन्तर जलवाद्य [illegible] कलशों पर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर रख [illegible]—

शिला विशाला लवणेन विद्धा [illegible]
भोगौघपुष्ट्यै दुरितौघपिष्ट्यै [illegible]

---

* वेदी की नींव हो तो '[illegible]' [illegible] की वेदी हो तो 'पञ्चकल्याणकप्र[illegible]'

ओं ह्रीं सर्वजनानन्दकारिणी, सौभाग्यवती तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

तदनन्तर

'ओं भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे भूतमविष्यविवर्द्धमानाय स्वाहा' ।

(यह मन्त्र पढ़कर बीचमें सोनेकी एक कील गाड़े)

तदनन्तर—

'ओं ह्रां ह्रीं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा'

यह मन्त्र पढ़कर आठ दिशाओंमें पाँच अंगुलप्रमाण लोहकी शलाकाएँ गाड़ देवे। बीचकी शलाकाका प्रमाण सात अंगुल हो। इन शलाकाओंको तेलमें भिगोकर तथा रेशम लपेट कर गाड़े।

तदनन्तर—

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा धर्मचक्रे पुण्यसहिताय शक्त्यनुसारेण द्रव्य स्थापनं करोमीति स्वाहा'

(यह मन्त्र पढ़कर शक्तिके अनुसार रुपया, सोना, चाँदी आदि द्रव्य डाले। फिर कारीगरको वस्त्र आदिसे सन्तुष्ट कर नींव भर दे)

तदनन्तर—

———

शान्तिकर्म*

किसी प्रकारकी विघ्नबाधा तथा उपसर्गादि के उपस्थित होनेपर शान्ति मन्त्रका इक्कीस हजार प्रमाण जप करे। अभिषेक पूर्वक चौसठ ऋद्धि विधान करे। हवन करे और पार्श्वनाथ स्तोत्र, शान्त्यष्टक और शान्ति भक्तिका पाठकर वृहच्छान्तिमन्त्र अखण्ड जलधारा दे। शान्ति पाठ और विसर्जन करे। चार दान देवे।

सर्वविघ्नविनाशक—

श्रीपार्श्वनाथ मन्त्रात्मज स्तोत्रम्*

श्रीमद्देवेन्द्रवृन्दारकमकुटमणिज्योतिषा चक्रवालै—
व्यालीढ पादपीठ शठकमठकृतोपद्रवोद्बाधितस्य।
लोकालोकावभासि स्फुरदुरु विमलज्ञानसद्दीपदीप
प्रध्वस्तध्वान्तजाल स वितरतु सुखं पार्श्वनाथोऽत्रनित्यम् ॥१

ह्रा ह्रा हूं ह्रौं विभोम्य्न्मरकतमणिभाकान्तमूर्तिर्हि व म
ह स त बीजमन्त्रै कृतसकलजगत्क्षेमरक्षोरुवक्ष।
क्षा क्षी क्षू क्षं समस्तक्षितितलमहित ज्योतिरुद्योतितार्थ
क्षा क्षें क्षौं क्षौं क्षिप्रबीजात्मकसकलतनुर्नं सदापार्श्वनाथ ॥२॥

ह्रीं कार रेफयुक्तं रर रर ररर द स स प्रयुक्त
ह्रीं क्लीं ब्लू ह्रौं सरेफ विपदलन कला पञ्चकोद्भासि ह्रं ह्रं
धू धू धू धूम्रवर्णरखिलमिह जगन्मोहिदिह्याशु वश्य
वौषट मन्त्रं पठन्त त्रिजगदधिपते पार्श्व मा रक्ष रक्ष ॥३॥

---

* शान्तिकर्मकी यह स्तोत्र आदि सामग्री इन्दौरसे प्रकाशित आदिनाथ स्तोत्र और तात्पर्य सह पूजासे की गई है।

ओं ह्रीं क्रों सर्वरस्य कुरु कुरु सरस क्रामणं तिष्ठ तिष्ठ
हूँ हूँ हूँ रत्त रत्त प्रवलनल महाभैरवारातिभीत ।
द्रां द्रीं द्रूं द्राग्येति द्रव हनन कर फट् नपट् वध वध
स्वाहा मन्त्र पठनां त्रिजगदधिपते पार्श्व मा रत्त रत्त ॥४॥
ह स भ्वीं क्ष्वीं स हस कुवलयकलितैं रङ्कितांङ्ग प्रवरै –
भ्वीं वं व्हं पत्ति ह हं हर हर हर हं पत्त य पत्तिकोपम् ।
य भत्र ह समय स सर सर मग ग्रू स सुधा बीजमन्त्रै
त्रायस्वस्थानरादि प्रवलविषमुखाहारिभिः पार्श्वनाथ ॥५॥
म्मां म्मीं म्मूं म्मौं म्म एतैरहिपतिविनुतैर्मन्त्रबीजेश नित्य
हा हा कारोग्रनादे ज्वलदलन शिखा कल्पदीर्घोर्ध्व केशे ।
पिङ्गत्तै र्लोलजिह्व विषम विषधरा लङ्कृतैस्तत्त्त्णदंष्ट्रे –
भूंतै पिशाचै रनधकृतमहोपद्रवाद्रत्त रत्त ॥६॥
ॐ ज्ञा ज्ञ शाकिनीना सपदि हरमिदं भिन्दि शुद्धेद्धबुद्धे
ग्लौं त्तम ठ दिव्य जिह्वा गतिमतिकुपित स्तम्भन सन्निधेहि ।
फट् फट् सर्व रोगग्रह मरणभयोच्चाटन चैव पार्श्व
त्रायस्वाशेष दोषा दमर नर वरैर्नूत पादार विन्द ॥७॥
स्वां स्वीं स्वूं स्वौं स्वाण्व प्रवलवलफल मन्त्रबीजं जिनेन्द्र
रा रीं रूं रौं र एभि परमत रहित पार्श्वदेवाधिदेवम् ।
का क्षीं क्षूं क्षौं क्ष ग्लै र्झ झ झ त झ जरा जर्जरीकृत्य देव
धू धू धू धूम्रवर्ण दुरित विरहित पार्श्व मा रत्त नित्यम् ॥८॥

इत्थ मन्त्राक्षरार्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्य ।
विद्वेषो च्चाटनस्तम्भनजनवशकृत्पापरोगापनोदि ।
प्रोत्सर्पज्जङ्गमस्थावरविषमविषध्वंसन चायुरग्य-
मारोग्यैश्वर्यभक्त्या स्मरति पठति य स्तौति तस्येष्टसिद्धि ॥

श्री पूज्यपादाचार्यविरचित

शान्त्यष्टकम्

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयं ते प्रजाः
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः ।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमण्डलो
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुरागं रविः ॥१॥

क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविषज्वालावलीविक्रमो
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवनैर्याति प्रशान्तिं यथा ।
तद्वत्ते चरणारुणाम्बुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणां
विघ्ना कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥२॥

सन्तप्तोत्तमकाञ्चनक्षितिधरश्रीस्पर्धिगौरद्युते
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडा प्रयान्ति क्षयम् ।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघातनिष्कासिता
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥३॥

त्रैलोक्येश्वरभङ्गलब्धविजयादत्यन्तरौद्रात्मकान् ।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानला-
न्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम् ॥४॥

लोकालोकनिरन्तरप्रविततज्ञानेकमूर्ते विभो
नानारत्नपिनद्धदण्डरुचिरश्वेतातपत्रत्रय ।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवत शीघ्र द्रवन्त्यामया
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जरा ॥५॥
दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुलश्रीमेरुचूडामणे
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर प्राणीष्टभामण्डल ।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपम शाश्वत
सौख्य त्वच्चरणारविन्दयुगल स्तुत्यैव सम्प्राप्यते ॥६॥
यावन्नोदयते प्रभापरिकर' श्रीभास्करो भासय–
स्तावद्धारयतीह पङ्कजवन निद्रातिभारश्रमम् ।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन् स्यात्प्रसादोदय
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पाप महत् ॥७॥
शान्ति शान्तिजिनेन्द्र शान्तमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात्
सम्प्राप्ता पृथिवीतलेषु बहव शान्त्यर्थिन प्राणिन ।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टि प्रसन्ना कुरु
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शान्त्यष्टक भक्तित ॥८॥

शान्तिजिन शशिनिर्मलवक्त्र शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्र नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम् ॥१॥
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च ।
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ॥३॥
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च ॥४॥

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः
तीर्थंकराः सततशान्तिकरा भवन्तु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवाञ्जिनेन्द्रः ॥६॥
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

प्रध्वस्तघातिकर्माण केवलज्ञानभास्करा ।
कुर्वन्तु जगता शान्ति वृषभाद्या जिनेश्वरा ॥८॥

इच्छामि भंते शांतिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउ पंच महाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसातिसय विसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेवेन्दमणिमयमउडमत्थयमहियाणं बलदेव वासुदेव चक्कहर रिसि मुणि-जदि अणगारोवगूढाणं थुइसय सहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्च काल अच्चेमि पूजेमि वन्दामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ।

आत्मपवित्रीकरणार्थं सकलदोषनिराकरणार्थं सर्वमलातिचार विशुद्ध्यर्थं सर्व शान्त्यर्थं शांतिभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहम् ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

शान्तिमन्त्र

ओं अ हां सि ह्रीं आ हूं उ ह्रः सा हः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नम ।

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरुवरप्रातिहार्यमण्डिताय अशोकतरु शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टिवरप्रातिहार्यमण्डिताय सुरपुष्प वृष्टिशोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिप्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यध्वनि शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय रम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम ।

ओं ह्रीं शान्तिनाथाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम ।

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम ।

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथ स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नम

ओं ह्रीं श्रीं शान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्टसहिताय बीजाष्टमयमन्त्रमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः ।

तव भक्तिप्रसादात्सकलग्राम-पुर-राज्य गेहपदभ्रष्टोपद्रवदारिद्र्योद्भवोपद्रव स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव मघवदपवनाग्निजलोद्भवोपद्रव शाकिनी-डाकिनी भूत पिशाचकृतोपद्रव-दुर्भिक्ष-व्यापारवृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।
सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूपमोक्षपुरुषार्थश्च भवतु ।

बृहच्छान्तिमन्त्र

ओं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारिमंगलं—अरहंतामंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारिलोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ह्रीं अनादिसिद्धमहामन्त्रप्रभावमंत्रशक्तिप्रसादात् सर्वशान्ति भवतु स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरह ताणं ह्रौं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं व म ह स त प व वं म म ह ह स स अ स प प क्ष क्ष क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रीं द्रां द्रीं द्रीं द्रां नमोऽर्हते भगवते स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं सिद्धचक्राधिपतये अष्टगुणसमृद्धाय फट् स्वाहा।

ओं ह्रीं अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापात्मक्षयंकरि श्रुतज्ञानज्वालासहस्र प्रज्वलिते सरस्वति तव भक्तिप्रसादात् मम पापं विनाशनं भवतु क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षीरवरधवले अमृतसंभवे अ व ह ह्रूं स्वाहा। सरस्वतीभक्तिप्रसादात् सुज्ञानं भवतु।

ओं णमो भयवदो वड्ढमाणस्सरिसहस्स जस्स चक्कं जलं तं गच्छइ आयासं पायालं भूयलं जुए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा। वर्द्धमान मंत्र या सर्वरक्षा भवतु।

ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा सर्वरक्षा भवतु।

ओं ह्रीं श्रीं शान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्टसहिताय श्रीनाष्टमचन्द्रमण्डि ताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः ।

तव भक्तिप्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्य गेहपदभ्रष्टोपद्रवदारिद्र्योद्भवोपद्रव स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव प्रचण्डपवनाग्निजलाद्भवोपद्रव - शाकिनी डाकिनी भूत पिशाचकृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापारवृद्धिरादिव्यापद्वाणां विनाशनं भवतु। सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूपमोक्षसुखदायश्च भवतु ।

ओं उसहाइ जिण पणमामि सया अमलो विमलो णिरजो वरया, कप्प
तरु सव्वकामदुहा मम रक्ख सहापुरविज्जयिदी ।

अट्ठेव य अट्ठसया अट्ठसहस्सा य अट्ठकोडीओ ।
रक्खउ तुम्म सरीर देवासुरपणमिया सिद्धा ॥

ओं ह्रीं श्रीं अर्ह नम स्वाहा स्वधा । 'ओं ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि
आ उ सा नम' एतन्मन्त्रप्रसादात् सर्वभूतप्रेतादिबाधाविनाशः
भवतु । ओं ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नम । ओं नमोऽर्हते सर्व रक्ष हूं फट्
स्वाहा । ओं ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र सर्वदिशागतविघ्नविनाशन भवतु । ओं
क्षां क्षीं क्षू क्षौं क्ष सर्वदिशागतविघ्नविनाशन भवतु ।

ओं सम्प्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरण-जन्माभिषेक परिनिष्क्रमण
केवलज्ञान निर्वाणकल्याण विभूषितमहाभ्युदया श्रीवृषभाजित-सभवा
भिनन्दन सुमति पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ पुष्पदन्त शीतल-श्रेयो वासुपूज्य
विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थ्वर मल्लि मुनिसुव्रत नमि-नेमि पार्श्व-वर्धमान
परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टि पुष्टिश्च भवतु ।

ओं ह्रीं लोकद्योतनकरा अतीतकालसजाता निर्वाण-सागर महासाधु
विमलप्रभ शुद्धाभ श्रीधर-सुदत्तामलप्रभमाद्धाराग्नि सन्मति - शिव कुसुमा
ञ्जलि शिवगणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर विमलेश्वर यशोधर-कृष्णज्ञानमति
शुद्धमति श्रीभद्र शान्ताश्चेति चतुर्विंशतिभूतपरमदेवपूजनभक्तिप्रसादात्सर्व
शान्तिर्भवतु ।

ओं भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्म देव-सुप्रभ स्वयप्रभ-सर्वायुध
जयदेवोदयदेव प्रभादेवोदङ्कदेव प्रश्नकीर्ति जयकीर्ति पूर्णबुद्धि निष्कषाय
विमलप्रभ-बहल निर्मल चित्रगुप्त-स्वयभू-कदर्प -जयनाथ विमलनाथ - दिव्य
वाग्नन्तवीर्याश्चेति चतुर्विंशतिर्भविष्यत्परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात्
सर्वशान्तिर्भवतु ।

ओं त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदया सीमन्धर युगमन्धर-बाहु-सुबाहु
सजातक-स्वयप्रभ -वृषभानन-अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु भुजङ्गेश्वर नेमिप्रभु-वीरसेन

महानद अवद्य-निवहोपारवेति पद्मविदेहमेरुविषमानविराविराम दुर्व्व दुस्तमक्तिमाहात्म्यसंस्तान्यं कर्मवन्तु शुद्धि पुष्टिरय भवतु ।

पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभि ।
चतुर्विधस्य सङ्घस्य शान्ति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥१॥
विघ्नौघा प्रलय यान्ति शाकिनीभूतपन्नगा ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमान जिनेश्वरे ॥२॥
दुर्भिक्षादिमहादोषनिवारणपरम्परा ।
कुर्वन्तु जगत शान्ति जिनश्च तमुनीश्वरा ॥३॥
यत्सस्मरणमात्रेण विघ्ना नश्यन्ति मूलत ।
कुर्वन्तु जगत शान्ति जिनश्च तमुनीश्वरा ॥४॥
यदर्थान् लभते प्राणी यत्प्रसादात्प्रसादत ।
कुर्वन्तु जगत शान्ति जिनश्च तमुनीश्वरा ॥५॥

ओं ह्रीं णमो अरहंताय णमो जिणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र असिआउसा घट् विघ्नाय क्ष्वीं क्ष्वीं स्वाहा । अद्रिमं प्रभृति ममाद्यप्रभृतेर्नो शान्ति-र्भवतु । विषूचिकाज्वरादिरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो अवधि जिणाणं परमोहिजिणाय शिरोरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाय अक्षिरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो अणन्तोहि जिणाय कर्णरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो कोट्ठबुद्धीय बीज-बुद्धीय ममात्मनि विवेकज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं परस्परविरोधविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो संभिन्नसोदाराय श्वासरोगविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो पत्तेयबुद्धाय प्रवादि-विघ्नविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो सयंबुद्धाय कवित्व पाण्डित्यं च भवतु । ओं ह्रीं अर्ह णमो बोहियबुद्धाणं अन्यगृहीत श्रुतज्ञान

ओं ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्ववेदिनो भवन्तु । ओं ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं स्वसमय परसमयवेदिनो भवन्तु । ओं ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं जीवितमरणादि ज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं विउव्वणइड्ढिपत्ताणं कामितवस्तुप्राप्तिर्भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो णमो विज्जाहराणं उपदेशमदेशमात्रज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो आगास गामिणं अन्तरीक्षगमनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेष प्रतिहतं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्थावरजङ्गमकृत विषविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वच स्तम्भनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अग्निस्तम्भनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं जलस्तम्भनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादि विनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्ट मृगादिभयविनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं लूतागर्भाविकावलि विनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारिणं भूतप्रेतादिभय विनाशो भवतु ओं ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं सर्वापमृत्यु विनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अपस्मारमहापनाधि" ता विनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो विप्पो सहिय पत्ताणं गजमारी विनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं मनुष्यामरापसर्ग-विनाशो भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं वचबलीणं कायबलीणं अपस्मारिगाजमारीविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादशकुष्ठगण्डमालादिकविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो सप्पिस सवीणं सर्वव्याधि विनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तापसर्गविनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं महायक्षादिभवतु ओं ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणं राजपुरुषादिभय विनाशनं भवतु ।

अचल यत्र

अचल यन्त्र
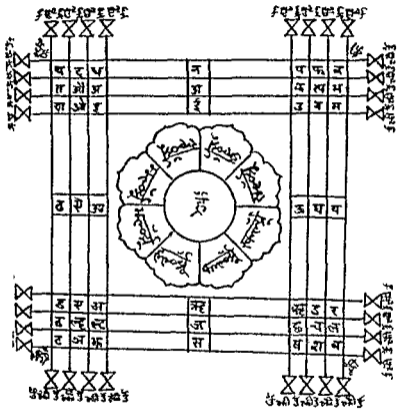
ओं ह्रीं णमो भगवदो महदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धरिसी ण समाधि सुखं भवतु चतुर्विधसिद्धिमन्त्रपूजनभक्तिप्रसादात् चतुःसंघानां सर्व शान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु सम्यग्दर्शनसमृद्धिर्भवतु रत्नत्रयं भवतु।

ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय अनन्तचतुष्टयसहिताय समवसरणकेवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसंयुक्ताय परमेष्ठिपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनन्तज्ञानदर्शनवीर्यसुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं आर्यिका श्रावक श्राविकाणां सुखं चतुःसंघोपसर्गविनाशाय अघातिकर्मविनाशाय देवाधिदेवाय नमो नमः। पूर्वोक्तमन्त्राणां पूजन भक्तिप्रसादात् अस्माकं आर्यिका श्रावक श्राविकाणां सर्वक्रोधमानमायालोभहास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुरुषनपुंसकवेदविनाशनं भवतु। मिथ्यात्वरागद्वेषमादमत्सरासूयेर्ष्याविभाव विकार विषाद प्रमाद कषाय विकथाविनाशनं भवतु। सर्वपञ्चेन्द्रियविषयेच्छाग्निदाहादारिद्रदुःखव्याध्याधिदीनतापापदोषविरोधविनाशनं भवतु। सर्वममकारविकल्पनिद्रातृष्णाभिलाषदुःखवैराहंकारसंकल्पविनाशो भवतु। सर्वाहारभयमैथुनपरिग्रहसंज्ञाविनाशो भवतु। सर्वोपसर्गविघ्नराजचोरदुष्टग्रहशाकिनीडाकिनीभूतप्रेतराक्षसादिमरणवेदनाशरणत्राणभयविनाशो भवतु। सर्वक्षयरोगकुष्ठरोगज्वरातिसारादिरोगविनाशो भवतु। सर्वनरगजगोमहिषधान्यवृक्षगुल्मपत्रपुष्पफलमारीराष्ट्रदेशमारीविश्वमारी विनाशो भवतु। सर्वमोहनीयज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयवेदनीयनामगोत्रायु कर्मविनाशनं भवतु।

नूतनगृहप्रवेश

नवीन गृहकी शुद्धिके लिये शान्तिमन्त्रका कमसे कम ११ हजार जाप करे, नवदेव और विनायकयन्त्रका पूजन कर चुकनेके बाद हवन करे। भक्तामरस्तोत्रका पाठ करे। तदनन्तर हवनकुण्डके कोनों पर रक्खे हुए कलश तथा दीपक, घरके स्वामीके हाथसे लिवा जाकर घरके मुख्य मुख्य कमरोंमें रखवा दे। पात्र दान दे। तथा सहधर्मियोंको आहार दे धर्मवात्सल्य प्रकट करे।

अन्त मङ्गल

आयुर्दीर्घयतु व्रतं दृढयतु व्याधीनन्यपोहत्वयं
श्रेयांसि प्रगुणीकरोतु वितनोत्वासिन्धु शुभ्रं यशः
शत्रून् शातयतु श्रियोऽभिरमतामश्रान्तमुन्मुद्रय-
त्वानन्दं भजतां प्रतिष्ठितमिह श्रीसिद्धनाथः सताम् ॥

(आशाधरस्य)